159-
Buddhist
Vidhi.

अभ्यासपुस्तिका
426 | I
ASHA ARCHIVES

Exercise Book

NAME _____

SCHOOL _____

CLASS _____ SEC _____ ROLL NO. _____

SUBJECT _____

कोश

बुबाहालातेल

बुबा हाल गाबाहाल

आजाता

बुबाहाल

नित्य आथ सर्न

१—× नित्य आथ सर्न धेत्र्यायग्र

२—× चो ताल—× नातिखतीं ६—× चल्ती त्वाल्हायग्र

१—× चल्ती—× धेनोताव ५—× न्हया

१× त्वाल्हायग्र + नौतिखतीमार ५—× गौ

२—× न्हयाशायग्र दीधीखतक ५—× चल्ती त्वाल्हायग्र

२—× गौकाराग्र + धेदीतखतीम ५—× न्हया

२—× न्हया नौंखरग तीनी ५—× गौ

२—× गौ नादीतखतिना ६—× चल्ती त्वाल्हायग्र

२—× न्हया रथमरीवाकुधली ६—× न्हया

३—× गौ रगतमिरिखरय ६—× गौ

३—× न्हया धनिदीताधेडाक ६—× चल्ती त्वाल्हायग्र

३—× गौ दीधा रवना ६—× न्हया

३—× चल्ती त्वाल्हायग्र धादी ७—× गौ

३—× गौ धाँ रति धाँ ७—× सीधेयग्र

७—× सीधेयग्र धाति रति

× चल्ती रवतनिना

× न्हया त्वाल्हायग्र रवतनी धाँ धेतीनीना

—× न्हया तीनी ताकु धाँ

—× गौ

लॉ — 400
बा. — 200
मे. — 300
सि — 900
बा — 1004
बे 300
800
3704

40/2400

94704

800

94

300
300

90
90
1
2
2
20
1
90
20
4
4
2
20
2
6
2
90

940

200
40
240

श्री

श्री नित्य भाग्यसर्न

धेत्तायगं

१ स्व:स्व: दी:दी: धेधे: नाना:

२ स्वदीत स्वतिजक नागर नना नना

३ दी दीत स्वतिजक नागर नना नना

४ धेदीत स्वतिजक नागर नना नना

५ नौंदीत स्वतिजक नागर नना नना

६ स्वंदीत स्वतिजक दी दीत स्वतिजक

७ धेंदीत स्वतिजक ना दीत स्वतिजक

८ तिदीत स्वतातिं दीत स्वतातिं धे नौं दीगो नौं

९ धेंनामना धेनाछी धौं: स्वना दीता धेंनाधे

१० धेंधेन तिति तक धौं: ॥

(चौताल II)

नाति: स्वताति: नाति स्वता धेनौना धेनौना तिधेनौ

(चलती)

धेनौ ताक धेनौ ताधेनौधेतेनौ स्वति ताक धेतिनौ

स्वं धेति ना २

(त्वाल्हायग)

नौं नाति स्वातिना नाति स्वति नाना

रग धौं तिनौना रगनाक धा धेनौ ना

(न्यायगु)

दीति स्वति ताक ध्ये दीति स्वताक ध्ये २

(गौ: कायगु)

ध्ये दीत स्वति ङाक न्हाँ ध्ये दीत स्वति ङाक नादीत स्वति
ङाक नादीत स्वति ङाक: न्याध्येना २ ध्ये दीत
स्वति ङाक नादीत स्वति ङाक न्याध्ये २ न्याध्य न्यागति
ध्ये न्याग धाँ रग धा: नाति स्वता स्वतक धिन्दि ×
ध्ये न्याक २ तिं ध्ये न्याक २ ना ध्ये ना स्वति धाँ
रग धा तिन्नी न्ना रग न्याक धा ध्ये तिन्नीना (च)

(न्हया)

न्हाँ स्व: रग तिन्नी: ताध्ये ध्ये न्याक तिन्नी: धा धाँ ध्ये न्याक
तिन्नी रिधीग दीगना ३

(गौ)

नादीत स्वति न्ना दीदीत स्वति न्ना ध्ये ति ध्ये ना २
स्वति ध्ये ना २ ध्ये ध्ये न्याध्ये ३ नाति स्वता ध्यन्याक
धीनी ताखति रग नादी धा ति ध्ये ति ध्ये ना (ध्ये
२

(न्हया)

रु मरी ताक धुलि रु मथाँ २ रु मरी ताक धुलि
ध्ये ना दीगना २ रु मरी ताक धुलि स्वति धो धाँ
ति धाँ दीगना २

(गौ)

रगातिनी रवरवातिनी रवता रवती दीता रवता
ध्येना मना ध्येनीना। ध्येतिनी रवरवातिनी
रवता रवती दीता रवता: ध्येना मना ध्येनीना।
ध्येनक धीनीता रवति रगनादि धाति धा२
दीगना दीगना२

(न्या)

धीन्दीता ध्येजाक ध्येना दिन्दिता ध्येधीधी दीगना
नाँरा ताक धुली ताध्येध्येनाक धुली धाँनक धुली
रीदी गना२

(गौ)

दीधाँ रवना, दीधाँ रनातीरवता ध्यनक धीनीतारवती
रगना२ रवदीता रवतीना दीदीता रवतीनादी
रीधा३ ध्येनारवाति धा२

((चल्ती त्वाल्हायाग))

~~धाँ दीगना~~

धाँ दीग नादीग३ धाँदीग नादीग३ धाँदीनादीग३
(गौ)

धाँ३ति धाँ रवातिनातीरवता३ रव, ना ताता रवता ध्येना
ध्येनारवता ध्येना तिनीता२ रवाति ध्येना, रवाति नाती रवता
दीति नातिरवता ~~दीति~~ ध्येनाति

॥ सीधा अंग ॥

धाती २ तिं रवातिना ३ नाति धातिं रवाति धाति धा
धाँग २ गातिं रवाति नाति रवता धेनीना २ धतातिं दी

॥ जति ताल ॥ द्रुतं

तिनी ता २ रवति नाधें नाति रवता रीधाँधाँ ति धाँ
धेनीना :

॥ चलती ॥

रवँ तिनीनाँ ताक रधु मरी ताक धेनी धाँ
धेंधे तु मरीना :

॥ त्वतयग ॥

रवाति धाँ : तिनी ता २ रवाति ताधें नाति रवता
रीधाँधाँ ति धाँ धाँ धेनीना :

॥ न्या ॥

धेंधें तिनी ता रवातिनी ताक धाँ ३

॥ गौ ॥

तिनी ताक धाँ रधुना २ तिनीना ताक धाँ ३ तिनीता २
रवति ताधें नाति रवता रीधाँधाँति धाँ तिधेनीना

चलती त्वाल्हायो

रधुनाँ धेनक रति धेनक रे नाधेना रवती धाँ
तिनी ता २ रवति ताधें नाती रवता रीधाँधाँति धाँ
धाँ धेनीना

(न्हा)

नाँ स्वतीता धेधे नाक धे धाँ धेतिरीतीं दीगना ३

(जौ)

नाँ३ स्व तिधे ना २ नार्गमना स्वती धेना दी२
दीगर्न मना स्वतिना दीगर्मना स्वतिधेना
ना२ नागरी मना स्वतिना दी२ दीर्ग मना स्वतीना
नागर्मना दीगर्मना स्वति धाँ तिनीता२ स्वति ताधे
नाति स्व ता रीथाँथाँति धाँ तिधेना.

चल्ती त्वल्हायग

धेनक २ ति धेनक २ ना तिनीता २ स्वतीताधे
नाति स्व ता रीथाँथाँति थाँ धाँ धेनीना

(न्हा)

स्थ मरी ता स्थ मरी ताक धुली स्व, दीगना२
स्थ मरी ता २ स्थमरी ताक धुली स्वदी धेना
दे दीधेना दीग धाँ धेनक धि दीना.

(जौ)

ता क धेना स्वना, ताक धेना, ताक धेना स्वतिना
ताक धेना स्वति धेना. ताक धेनक धेना ताक धेना स्वतेना
दीग धेना स्वती धेना: ताक धेना ताक धेना स्वतीना
दीक धेना दीक धेना स्वती ना. ताक धेना दीग धेना
तिनीता२ स्वति ताक धे नाति स्वता रीथाँथाँति धे

०

चलति त्वालाप

ध्येनघ४ ति ध्येनघ४ ना ध्येनारवती धाँ तिनीता२
रवती ताध्ये नातीरवता रीधाँधाँ ती धाँ धाँ ध्येनीना

((न्यास))

रवदीता रवता रवती दीता ध्येनीना दीतीतारवता
रवती दीत ध्येनीना. ध्येनघ२ ध्यन्ना नातीरवता
ध्येनघ२ ध्येन्नाना ध्येन्ना२ तिध्येना२ रवना..

((गौ))

रवता ध्येध्ये तीनी रवतीती रग तीनी. ध्येतीती
रगमामना रवतीना. दीता ध्ये तीनीरगना रीधा
दीगना२ दीता ध्येध्ये तीनी दीती ती रग तीनी
ध्येतीती नती रगना मना रवतीना. रवता ध्येती
नि रगना रीधाँति धाँ दीगना२ रवता ध्येध्येतीनी
रवतिंति रगतिनी ध्येतीती नति रगना मना रवतिना
रवता ध्येतिनी दीता ध्येतीनी धाँ तीनीता२
रवति ताध्ये नातिरवता रीधाँधाँति धाँति ध्येनीना
रवना..

दीगतीनी
रगतीनी

((चलती त्वालाप))

ध्येनघ४ ती ध्येनघ४ ना ध्येनारवती धाँ
तिनीता२ रवती ताध्ये नातिरवता रीधाँधाँति धाँ
धाँ ध्येनीना

1

॥चच्चा॥

धाँ तिट्टीग नाट्टीग २ नाती ट्टीग नाट्टीग २

॥गाँ॥

ताक धाधाँ रवनाँ ताक धाँधाँ धातीनी नाटी तीनी
टी तिनीनाति टीग धा धा धातीनीनाटी धाँ रवना
देवनशाती २ धाँ तीटी रवती ज्यकृटिटी २
ता नाध्ये तिट्टी धा रवना

सीचेक्यगु

धाँ धेंतु नारी २ ज्यक ना २ नाध्ये तुमरी ज्यकुना
धा ती धा तिनीता धेंनीता रवती ताध्ये
नाती रवता धेंना धेंरी ती ताक धा धेंं #

ঊ. সর্ব্বাঙ্গে কলঙ্ক লাগায় সি.

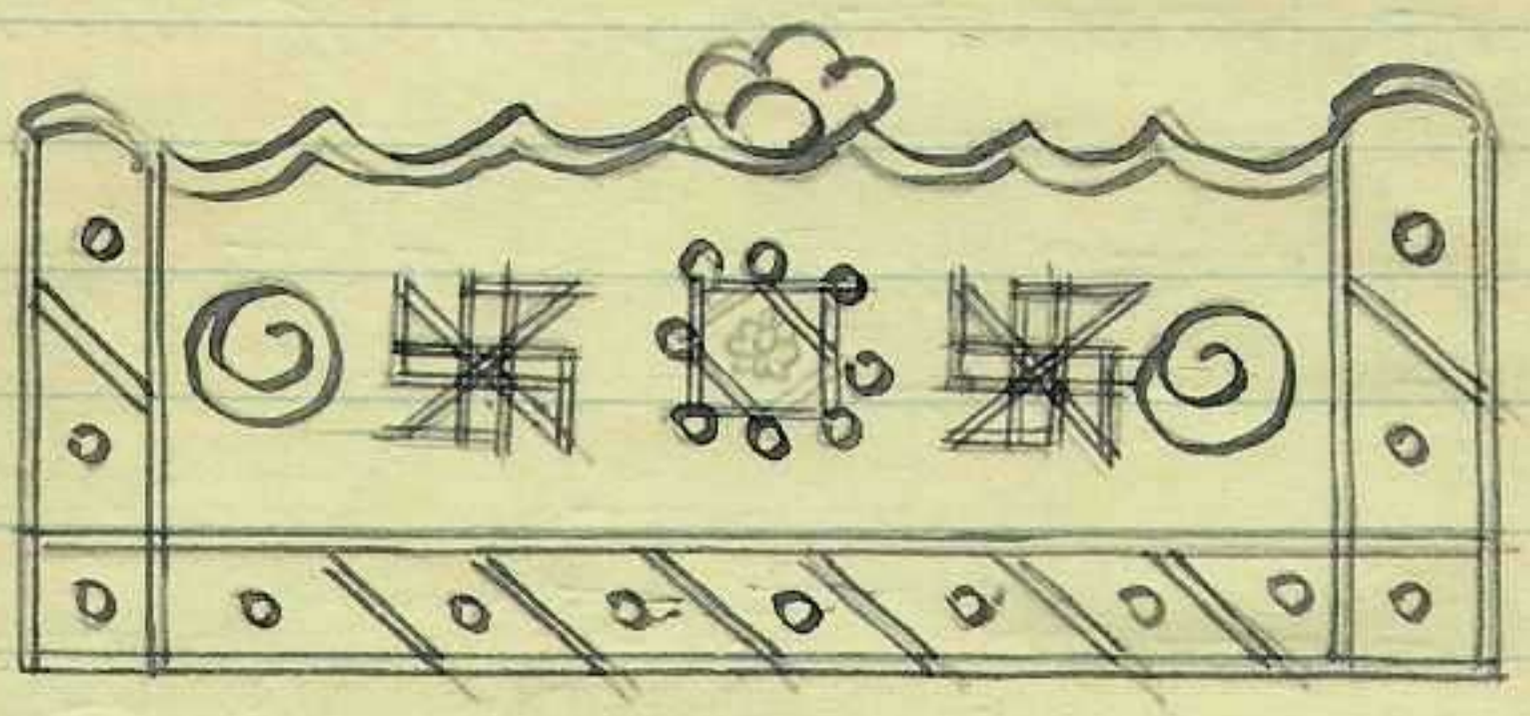

বলি.

মল.

গুরু.

ॐनमोगुरुवज्रसत्त्वाय:॥ ॥ॐ आचमनप्रमिक्ष
स्वाहा॥ ह्रीं अमृत अभिषेकस्वाहा॥ हृदयस्वाहा॥ ह्रीं स्वा
हा॥ कायविशोधनस्वाहा॥ पादोपस्पर्शनस्वाहा॥ ह्रां ह्री
नाघंप्रतीच्छस्वाहा॥ स्थानपूजाकथियानय॥ ॐ सिद्धिवसु
क्रियाचम्बवृद्धिवसुधनागम॥ पुष्टिवसुसरीरपूजाभिद्ध
सुगृहागम॥ ॐनमोरत्नावलीपूर्वकृतु राजायनथागतायां
हंकसम्यक्संबुद्धाय॥ नयथा॥ पुष्प२महापुष्पसुपुष्पपु
ष्पसंभव पुष्पविकाशकमल पुष्पावकिरणशक्तस्वाहा॥
दानपतियजमानस्य भपालमंडुलाकरगनलालिनयक्ष
नमहानगायानुवीथ्रजशोवरभाम महाविहारान् यथा
दिग्रहाणनिवासिन् रोमकम गातान्यत्र वज्रावार्य यथा
नामधेयस्य कार्यापूजपूजि पात्र पात्रादिसर्वविवाय
सर्वथा सरीरआयु आरोग्य कल्याणि सुफलपान्ध
र्थं॥ ॐ हजन्मनिसूखसंपत्ति पूरणवामाकृगानि धर्मार्थ
कामसिद्धि चमुवर्गफलपाप्तार्थं॥ स्थानाद्यान कृतसमस्त
दुःखपापशान्त्यर्थं आदित्यादिनवग्रहाविष्टशान्ति राज
चोरादिकाग्नि विषशस्त्र दुर्भिक्ष पर्वतशक्रकयादिभु
ष्टमहाकयादिनिवारणार्थं॥ सर्वसिद्धिपवर्तन धनवन्ता
दिसृविद्धिफलकामनार्थं॥ अकालमृत्यु कयानिवारण

र्थं पूर्वकदीर्घायवस्तु शुक्रफलप्राप्तार्थं॥ मनुकूल दुर्हिका
दिदारिद्र दुःखक्षयाहिन सकलशुक्रफलप्राप्तिकामनार्थं
अस्मिन्दिने रुगावनर्थमिनर्थाशीपरमभव्यपरमभव्यवीर
वदेवो आवाहनाय सुप्रसन्नद्भावाग्रे॥ संपूर्ण कलशावना
दि जलेन महाकाल आयुवृद्धि पंचरत्नामाता लक्ष्मीवि
ध्वानय स्थापना आवाहनाय यथाशक्ति पंचोपचारपूजा
कर्तु॥ यथायथा क्रियाकर्मेण ॐ दंकमलपुष्पाक्षतुनम
स्कुर्मि॥ पूजा रथिवाजुन्याय॥ पूजाफलउल्लासाकाय॥
ॐ आदीकल्याण मध्यकल्यान पर्यवसानकल्यान शार्ध
साधजन कवलपरिपूर्ण पर्यवसाय ब्रह्मचर्य संप्रकाश
यन्दिस्मह॥ ॥ॐ नमोश्रीवजसत्वाय॥ ॥ज्ञाया
ज्ञानिहाजलपाबाब्ध॥ ॐ गुरुवृद्ध गुरुधर्म गुरुसंघमर्थे
वव॥ गुरुवज धरतेव गुरुसवनमाम्यहव॥ ज्ञानिनि
नाष्टाय॥ हानज्ञानिज्ञानविन्दिवाय॥ ॐ नमोश्रीवजस
त्वाय॥ ॐ वश्रीवजसत्व तुवशवनगुरु सर्ववृद्ध रवन्दु
नानारूप नयनानिमिषरुपहव निमिनभरुसस्तिन धर्मा
धाश मुनीनाजिनवव सुगता मंगुलवजधतु सर्वानद
कपूप सहजसुखमय दहिनभाक्रहतु॥ ॥थनल
खशोधनयाय॥ ॐ वजुश रूपवदननम॥ ॐ वजुशरूपपु

ध्यं नमः ॥ ॐ वज्रशूपयज्ञपवीतनम ॥ आचमनाय ॥ ॐ नागपा
सामधानिमंडलराजामहाबल ॥ निर्विकल्पे निर्विघ्नाना
वज्रायनमस्तु ॥ ॥ थनआसनाय ॥ ॐ आः हुं
सुमाहावंआदक सुमृतकवंदुक्तस्वाहा ॥ अमिषिविंदु
मां सर्वनथागनस्तु यथाहीआनमाकेश स्यापिनाशुद्धिदिव
नवाशिश नथाहंसाकपिष्यामि ॥ ॥ थनदेवनायान
स्नानयाम्ह ॥ ॐ यन्मंगल सकलसत्व हृदयस्थितस्यसर्वा
त्मकस्य ॥ वरसर्वकुलाधिपस्य निर्गयसत्वजनकस्यमहा
सुखस्य नन्मंगलकवनुन पवमाशिष्यक ॥ ॥ आकंचन
ॐ पानिविम्बुसमाधम्मा आख्या सुधाहलाविना ॥ अमाहास
अनुकंपाव हमुकर्मसमुद्भव ॥ ॥ अमिषेकक्रियाः ॥
अमिषेकमहावुद्ध अथामुकनमस्कृत ॥ ददामिसर्ववुद्ध
नामिगुह्याश्चसंकव ॥ धूपकन ॥ ॐ आगच्छ पवमदेव
ध्वस्थान पवमध्वजी अहं पूजाकर्मी व्यामिसदाशासंमुखा
कव ॥ स्वावनश्रीमनुश्रीबुद्धधर्म संघमिवन्न आवाह
नाय ॥ ॐ देवजधूपनिर्यातयामि ॥ आचमनाय ॥ आकर्ष
स. पादार्घ पूजायाय ॥ स्वानवाय ॥ ॐ बुद्धायशाक्य
सिंहायस्वाहा ॥ ॐ धर्मायपद्मायमिनायस्वाहा ॥ ॐ संघा
यआर्यावलोकितेश्वरायस्वाहा ॥ ॐ आर्यवेलावनायस्वाहा ॥

ॐ अमृताय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्रसंकवाय स्वाहा ॥ ॐ अमिताभा
य स्वाहा ॥ ॐ अमोघसिद्धि स्वाहा ॥ ॐ शाक्यनाथाय स्वाहा ॥ ॐ
मामकी स्वाहा ॥ ॐ पाण्डुराय स्वाहा ॥ ॐ आर्य्यतारायै स्वाहा ॥
ॐ वज्रपुष्पं वमिष्ठ स्वाहा ॥ पञ्चोपचारपूजास्तुति ॥ ॥
ॐ नमस्कृ बुद्धभूपाय धर्मभूपाय नमम ॥ नमस्कृ संघभूपाय
पञ्च२ बुद्धाय नमम ॥ ॐ नमस्कृ पञ्चबुद्धानां मूलाद्यादिकुल
त्रय ॥ मध्ये वलोचननाथं पञ्चबुद्धनमस्तु ॥ धावजिकाय
मनविय मायहाल ॥ थूलिस्वकावपूजा ॥ हानंनाथाय ॥
ॐ नमो भगवते पूर्व्वकुवाजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबु
द्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ पुष्प२ महापुष्प सुपुष्प पुष्पसंकव पु
ष्पविकाक्रमन पूजावकियनक स्वाहा ॥ थवाजुन्वाय ॥
खानक्रमु जउावाहारवउावाहामन शिथक्रमुगथ ॥ ॐ आकृ
ष्टिकायाधिष्ठान सर्वपापानपनकृ२ निष्टवजाधनस्वाहा
ॐ मणिधनीवाजिनीमहाविमसथकृ२ मांसर्वसत्वांवकृ
ष्टस्वाहा ॥ सिद्धनिर्द्धि ॥ ॐ सुवर्णनिलक विरमयसंप्रति
ष्ठस्वाहा ॥ मण्डलाथिय ॥ ॐ प्रास्तोयकृ सर्वविघ्नास्तोयकृ
वजारमकृ वजलायकृ सूलाय२ सर्वमथागतस्तु गुरु
भूधिनिष्ठ कुस्वाहा ॥ मण्डलकापूथ ॥ ॐ दानं गोमयमम्बुना
वसहिंसीलंवसमोजनं क्षांतिश्च दनपिपिलिकापनय

नवीयक्रियारक्षपनं ॥ ध्यानमकनमक विकृकनमषट्कासूल
श्वाञ्जला नुगापायमिमायण्ड वचकम कृत्वामूनिमशुल्ल ॥ रव
तुकनकवर्णं सर्वपापविमुक्तं सूर्यमनुजविसिष्टं चन्द्रवृ
द्धिकान्दि धनूकनकसवृद्धिजायनवाजवंशासूगमवपगृह्ण
सिंकायकर्मानकृत्वा ॥ ॐ आ ह्रूं मूलरव २ सर्वनथागनस्तु
गुरुचन्द्रादि विमलप्रनिष्ठस्वाहा ॥ थन्ध्यानयाय ॥ ॐ मन्द्रादि
स्कमरुमिमध्य यंकारादिचतुर्विजसंजानमहाकनवायुजु
मिङ्गलावलिमशुलंपविसंकाशनमध्यमभूपवसिंहासन
स्थितं पद्मकन्द श्रीवजसत्वस्त्रिवजकमूरवं शुल्कवर्णं वज
घण्टावनविविधाकशरगिवशिवबीवव मानिसंहुंकनील
वर्णं जूम्भाद्यादिलंकृतं लगवन्तंगुरुकृपायन्ध्यात्वा ॥ ॥
आकर्षयाय ॥ ॐ स्वकावसूवासर्व धर्मानास्वकादशुद्धा ह्रं
शुन्यनाकानवज स्वकावात्मकहंशुन्यविकाय ॥ ॐ वजाकर्षश
ह्रं २ ॐ वजाबन्धह्रं २ ॐ वजाकुशाज ॥ श्रीवजपाश ॥ ह्रं वज
स्फोटम ॥ वंवजाग्निषह ॥ ह्रं ह्रं ह्रं ॐ वजशान्त्याय श्रीमन्
श्रीश्रीगुरुमशुल वजसत्वस्त्रिकायवचनकमलस्व पा
यावमनार्घपुष्पिस्वाहा ॥ ॥ आदिडापुरविवाय ॥ ॐ ज
ह्रं वहाकुसुमाञ्जलिनाथमशुलवजपुष्पं स्वाहा ॥ स्वानवाय ॥
ॐ हमध्यमवनम ॥ ॐ ह्रं उर्ध्ववनम ॥ ॐ हाजूं धावनव

नम॥ ॐ यंपूर्वविदहायनम॥ ॐ वंजंबाधिपायनम॥ ॐ वंजूप
वंगाजावलियायनम॥ ॐ वंउत्तरकुरुवनम॥ ॐ वाउपद्वि
पायनम॥ ॐ वाउपद्विपायनम॥ ॐ लाउपद्विपायनम॥ ॐ
वाउपद्विपायनम॥ ॐ नगाजपत्नायनम॥ ॐ वंपूरुषपत्ना
यनम॥ ॐ वंजूरुषपत्नायनम॥ ॐ वंस्त्रीपत्नायनम॥ ॐ वाच
कपत्नायनम॥ ॐ वारक्षपत्नायनम॥ ॐ वामशिपत्नाय.
नम॥ ॐ वांसर्वनिधानपत्नम॥ ॐ जंक्षेत्रपत्नायनम॥ ॐ जा
सूर्यायनम॥ श्रीमन्वजसत्वगुरुवनम॥ ॐ आगच्छ२ मा
वज्रगुरुजूधिमिष्टुंकुरुस्वाहा॥ सिद्धिसिद्धि॥ ॐ वज्रगान्ध
स्वाहा॥ ॐ वज्रसिंचुपायस्वाहा॥ ॐ वंजपुष्पस्वाहा॥ ॐ वं
जधूपस्वाहा॥ ॐ वज्रदीपस्वाहा॥ ॐ वंजनवेद्यस्वाहा॥ ॐ वज्र
राजायस्वाहा॥ ॐ वंजदर्शनरत्नायस्वाहा॥ ॐ वंजताम्बू
लप्रतिच्छस्वाहा॥ ॥ नास्याकाय॥ ॐ वंजसत्वसमाहक
वज्रसत्वमनुपालयवज्रधर्मकायधनवज्रकर्मकुरुहव॥ ॐ
वज्रलास्य हुंवज्रमाल्य गांवज्रगीति हीवज्रनृत्यजू२वज्र
पुष्पहुंवज्रधूप गांवज्रालोक हीवज्रगन्धजू२नमरदस्तु
नमामिनमानम॥ हुंस्वाहावज्र हास्वाहायस्थ गंक्रिज२हुं
हानस्थाणवान॥ ॐ नमबुद्धाय गुरुवनमाधर्माय गावशनम
संघाय महकम॥ ॐ आः हुं ग्रामगुरुवजसत्वगुरुवशकम

लाय॥ ॐ नमो सम्यक्सम्बुद्धानावलोकितेश्वराय॥ नमो ह्रं नमस्कृत्य
नमामि नमो नमः॥ रक्षा हं त्वा नमस्यामि गुरुनाथप्रसिद्धिभ॥
यस्य प्रसादं क्रियते रक्षा निर्मलकारकं॥ तत्र प्रकाशयति कमलप्रह
मांधकारा॥ पद्मनयनाविकसितसविलासमूर्त्ते॥ तस्मै नमस्कृ
त्य गुरुं गुरुकारुणाय॥ नमस्तत्त्वत्रयाय॥ त्रिरत्नाय नमो नमः
सर्ववुद्धनमस्यामि॥ धर्मं च जिनभाषितं॥ संघं च शीलसंपन्न
तत्त्वत्रयनमस्कृतं॥ तत्त्वत्रयमगतश्च सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ घ्रजु
नूमादिकगादन्मुख्य वुद्धवाधोद्धनम॥ आवाधोगतश्च
यामि वुद्धधर्मगतानुक्रमं॥ वाधो चिक्रकाभ घस्वपवार्थप्र
सिद्धय॥ उत्पादयामि परमं वरवाधि चित्तं निमंत्रयामि वर
सर्वसत्त्वार्थ॥ ॐ हूं वाचलिष्य वरवाधि चित्त वुद्धानवयंकरा
भाहिताय॥ दहनासर्वपापानां पुण्यानां चानमादिनां कृतापा
वासकरिष्यामि॥ आर्यावलोकितेश्वरमुपाश्रय॥ मंगुलसज्जाकिलरव
हायक॥ ॐ अमूर्त्तगगनयामयुवमुपद्विपद्मसा हिमंस
कमलसमाकीर्णं॥ नदनुकूलदायनीगुरुवुद्धधर्मसंघा॥ सघ
कथनथवच॥ आत्मानिर्यातयामि कायवचसंपूर्णं॥ तत्त्व
मंगुलं॥ आकिंचनाविक्रियाय॥ ॐ अनादिगानिसंसार
जनमरण॥ वचापुन॥ जन्मयापकुलापापं कृतं कायिकमभवा
कथानुभाजिन॥ किंचिदात्मघातायमाहिता॥ नदनार्थ

क्षमाधामिपरश्वामापनमापिला चक्रमयप्रकाशाआमामापिल
वामया॥ गूगूष्वनकवाक्षिपाकायवा वूद्धिरिकृम॥ जून
कदाष दुष्टन मयापापनमाहिना यमकृमदारूणपापंन
सर्वदशायाम्यह॥ ॥थनलोकपालवलिविय॥ ॐ जू
कपिमूखंसर्वधर्माशामाथनूपंनमाहामी महायक्षी
सर्वसन्नानाविचक्रकूं ॐ जू: हुंफट्स्वाहा॥ स्वानवाय॥
ॐ हूं इंद्रायनमस्वाहा॥ ॐ यमायनमस्वाहा॥ ॐ वरूणाय
नमस्वाहा॥ ॐ कूवेरायनमस्वाहा॥ ॐ जू ब्रह्मनमस्वाहा॥
ॐ नमृत्यनमस्वाहा॥ ॐ वायूध्यनमस्वाहा॥ ॐ हूं ईशा
यनमस्वाहा॥ ॐ ॐ ऊर्ध्वब्रह्मनमस्वाहा॥ ॐ चंद्रायनम
स्वाहा॥ ॐ सूर्य्यायनमस्वाहा॥ ॐ जू धापृथिध्यनमस्वाहा
ॐ नागाध्यनमस्वाहा॥ ॐ जू सूर्यध्यनमस्वाहा॥ ॐ सर्वादिग
लोकपालध्यनमस्वाहा॥ ॐ वज्रपूष्पप्रमिष्ठस्वाहा॥ पञ्च
पचावचास्यापूजास्तुनि॥ ॥ॐ नमस्द्धाकुवाजानासर्व
दुष्टनिवासिनी॥ मंत्रलोकवीजयावीरादशाक्षाठनमस्तुन॥
ॐ हूं दादयामहावीरालोकपालामहर्द्धिका॥ दशादिक्ष
स्थिमावीरालोकपालनमाम्यह॥ ॥थनरमथापवाव
स्मयक्षाय॥ ॐ नेवश्यसर्वसंयुक्त खाद्यकाथ समाविनं॥
नसवसानि जाथिमानि ददामिपदमंपदा॥ लाक्षाय॥

पञ्चस्वर्ण समयावार्य मन्त्रसमन्वितं॥ निर्व्विकल्पक विकल्प
निष्कलं जं नवसूत्र॥ अन्तःकाय॥ हूंकारपरमंदेव हूंकार
सिद्धिकारकं॥ हूंकारस्वरूपं नवहूंकारन्दुनमस्कुरु॥ मनवि
ध्य॥ गुंदीपायहवन धानंदीपज्वालानवपक्व॥ धाषयामिप्र
ज्ञासान्द सर्वहानप्रसिद्धयन्॥ नायहाल॥ ॐ हूंधर्म्मावाह
नुपकावाहनुनषा नथागत॥ हवंदन्दषावथानिषाधनवंवा
दिमहाश्रवस॥ ॥ समाहवान्य॥ ॐ वज्रसत्वसमय
मनुपालय वज्रसत्वभनपनिष्ठ दृढाभव सुपोषाभव
सुतोषाभव अनुरक्तभव सर्वसिद्धिमेप्रयच्छ सर्वकर्मसु
चमचित्तंश्रेयंकुरु हहहहाकारावनसर्वतथागतस्तुवज्रमा
भमुञ्च वज्रिभवमहासमयसत्वत्वा॥ ॥ विशर्जनयाथ
ॐ कृत्वसर्व सत्वार्थ सिद्धिदत्वायथानुगा गच्छ वंवृद्ध विषय
पुनरायगमनायच॥ ॐ आः हूंहूंनिर्य्यादशाधनुगच्छ वज्रम
पुलविशर्जनम॥ कारलपूजा॥ धूपवर्द्धन॥ स्नावरुग्रीमनु
ग्रीवज्रवाराहीदेवी आवाहनाय हूंदवज्रधूपानिर्य्यादया
मिनमानम॥ ॥ आय॥ आकर्षण पाद्य पूजायाय
स्वानवाय॥ ॐ वंवज्रवाराहीहूंहूंस्वाहा॥ ॐ हांयायामिनी
स्वाहा॥ ॐ क्रीमोहनीस्वाहा॥ ॐ हंक्रोसंवाशियस्वाहा॥ ॐ हूं
हूंसन्तासयस्वाहा॥ ॐ हूंहूंहूंवशिकायस्वाहा॥ ॐ वज्रपु

वंपनिष्ठखाहा॥ पेञ्चपवानवास्कासुनि ॥ ॐ नमाश्रीवज्र
वाराहीमन्दमूर्त्ति जिनरूपनी॥ अनुपमवरदाहीमायपुरीनु
निवासिनी॥ ॥ सिद्धमनक्ष ॥ ॐ उद्यानामनचक्रना-
निनुकेमाविशुद्धमाहास्वाद्धाविनृमयामलाक्षमाहिना
पियूषधारा पूर्णा बुद्धावुद्ध ज्ञानरसाविवाविकसुषा सानन्द
सिद्धाहया सावाकाव विद्यानिधा विवहिमाश्रीवज्रवाराही
कांपानुव॥ ॥थनऊजमानयामयहस्पदनक्ष॥ यहस्य
कार्य॥ विशर्जनयाथ॥ थनत्रिसमाधिदन॥ ॐनमाश्री
चक्रसम्बराय॥ ॐसमन्वाहवमुमावुद्धा अनुत्तराधिष्ठस्थि
ता॥ ॐनमाश्रीचक्रसम्बराय॥ थागामृतकलशयानविशुद्ध
चिक्रपीठाधिष्ठाणमननविशुद्धदेह श्रीपीठमध्यवरम
शुलचक्रनाथवन्दसदा॥ पूर्वुवाशिवसायनन अनुत्तराधि
महावाक्ष यस्यामन्द्रसमापिन॥ वन्दनावज्रवाराही चक्र
सम्बरनायका दक्षावलीस्थिन दहवाविदसदाराज
नसर्वगाता॥ चक्रकृष्णनाथासहजामलाचवन्दसदासम्बरथा
गसाना ब्रह्माबाकृनसायाशुक्लनीलय पञ्चस्पगाहवलमय
धवलह शकुशुधवल यूम्यन्नसर्वात्मक सर्वहसुविशुद्ध
नीलय देवालयसुन्दर वन्दह सहजामलाचवलमिशीस
हजाद्वयनायका॥ ॥मरीकमुशा मूदिनायका॥ ॐस्वका

वज्रज्ञानसर्वधर्माणां स्वभावशुद्धाहं शून्यतानिर्वाणवज्रस्वभा
वात्मकोहं शून्यविशाय ॥ प्रथमतः श्मशानपर्वतशीर्षे च
स्थान सर्वापवीतमुकुटधरी दक्षिणे अक्षिमुखयाणीपञ्च
मुनवर्णिकामुखपद्मिकृष्णः शीर्षे हुंकारश्चमुमामुखमयन
शीर्षायकारमहायक्षान हुं हुं निहुं हुं निशुन्यवृषहुं निशूप
गनमूहकहुं निनद्धस्थिनशुन्यविशाय ॥ तनपञ्चस्कन्ध
हकारमूर्त्यादयन ॥ रूपस्कन्धवलावना वेदनास्कन्धव
जसूर्य संज्ञास्कन्ध वज्रसत्व पद्मनृत्यध्वज संस्कारस्क
न्धवज्रनाज विज्ञानस्कन्धवज्रसत्व ॥ शीर्षहुंकारवज्रवज्र
भाहवज्र शीर्षयवयवज्र घ्राणयहुंध्यावज्र वक्त्रा
नागवज्र सपर्शनासूर्यवज्र सर्वायतनेषु वैश्यवज्र
पृथिवीधातु पानीआपधातु मारुतिवज्रधातु आकाश
वज्रवायुधातु पद्मनृत्यध्वजआकाशधातु पद्मज्वाल
नी नवस्कन्धधात्वा यथेषुदवना विशुद्धि ॥ हादिस्थिन
पकायस विश्वदपद्मपद्मकर्णिकापरि चन्द्रसूर्यम
शुल नदुपविलुकाय नदुपविशामिश द्विभुजसम्बव
रावयन ॥ रुगावनन कृष्णवर्ण भकमुख निभ्रा आलि
आसनस्थिन ॥ महाकेशव कानिवाल्लाकान्दमान वज्रवा
राही आलीगन ॥ रुजद्वयनवज्रघण्टाधरजटामकुटम

शिव॥ कपालमालालंकृतं शेषवंसूर्द्धवन्द्रमाशिखंविश्वव
दा कान्दमौलिनं विकृतानन दष्टा कटीषसंगृंगा रादिव
सानिनं॥ व्याघ्रचर्म्मानिवसनंसाक्षनवशिवमालागलनाद्वैधा
रीस षटमुद्रा षटकस्थिद्वाद्वकुलमयलाशिवामशि
सुषस॥ अस्त्रपविमहसिनि षटमुद्रापकीक्रिदा॥ षट्
पायमिनाविशुद्धि षहिमुद्रामुदिन नस्पागना रुपावनी
चक्रवर्त्ती नदमुरवा द्विसुजातिनका मुक्तकेशानवाषट
मशिनाभषला वामभुजालिंगिनाकपालि इष्टसायशिषव
रा दक्षिणनर्जयन्दिदिश सवा इष्टनर्जीवाजिका कल्या
शिवनमहानजा शवरनी चुधिवमुखि जंघाद्वयसमान
वस्था नायकंमहासुखकुलान्मीकाःथनन्यासयाथ॥
ॐ श्रीहसूंक्ष्मा ३॥ ॐ सूर्य्यमण्डलं आकाशमण्डलं सूर्य्य
मण्डल॥ ॐ वज्रपञ्जरहस्त्रा॥ हनमद्भिस्वाहा॥ हुंवाषट्
हुंहुंहाकट२ दक्षिणहस्त॥ ॐ वंहाया क्रीमा हस्त्रा हुंहुंहाकट२
वामहस्त॥ ॐ हः हृदय नमश्चिल्लाटि स्वाहा हुंशिखा
वाषट्हस्त्रवंद्वय॥ हुंहुंवंकवच॥ कट२ सवाशस्त्रस्त्र॥
ॐ वंनाल हाया हृदय॥ क्रीमा कण्ठ॥ हुंचिल्लाटि हुंहुंहा
शिखाया॥ कट२ सवाशस्त्रस्त्र॥ मूलन्यास॥ धनमन्त्रजाप
याथ॥ ॥ ॐ श्रीवज्रहस्तसूर्य्यहुंकट्याकिनीजालस

स्वाहा॥ ॥थनसाकिश संखलखंनहायाय॥ ॐखशु
भाहुंफट्॥ पूष्पाधिस्थान॥ संखाधिस्थान॥ ॐमिष्टवज्रहुं
वलि॥ ॐवज्रसमहु॥ पात्र॥थनमन्त्रपात्रसथमय॥ ॐजूः
हुंमन्त्रकाटकशुद्धविकावयन्॥ ॥ धान॥ ॐआद्धाशश
कपालंव मन्द्राशवाबुशी जूष्टादशाकुलामन्दमूखावकव
र्षुरिनता: खर्गवाना कुशासर्वकपालकुलिश ध्वज॥ नथाग
नन्थाघस्थनवमन्द्रवरपदा शुटन्द धनुपाशंव खड्गा
सन्द्रमशुलू शुलमूसलवीनावगानयन्द्रि चाक्रशन्द॥न
वजोवनवावन्ना॥ सूजोनासूवसुन्दरी॥ हहाहीहन्द
हवन वर्षु हाद्धायगन्धनाशन॥ हीन्द्रावी जहनावजूमृता
कावन्द्रनावयन्॥ ॥ ॐजूः हुहहा हीगाहुतमूद्राधिष्ठा
न॥ गामोपांगोवजूं जिंर्व हुंसूवाकहुनीगुप्तवजीनी जूमृन
हीं जूरवंपनिष्कुस्वाहा॥ थन जगुपाहालानरपूरकगुनथन्द्राय
ॐनमाद्रवीवाबुशी जूमृनजूमृनसंरव सवसत्वानांवजूमृ
नं हीं जूरवंपनिष्कुस्वाहा॥ धूप॥ रुगावनुर्थामनुर्थाशी मन्द
पातकाटन्द द्रवीआवाहनायहुं द्रवंजधूपनिर्य्यादयामि
नमानम॥ ॥ जाप॥ आद्धशश पादाय पूजा॥
स्थानवाथि॥ ॐवंजकाटकायस्वाहा॥ ॐसमयकाटका
यस्वाहा॥ ॐविस्मयकाटकायस्वाहा॥ ॐसमयाविस्मयक

शाटकायस्वाहा॥ ॐ वज्रपुष्पांगिकुस्वाहा॥ पञ्चोपचारास्या
स्तुमि॥ ॐ नीलपीतलाजनीलाका मूकाय संगसंगिनी॥ सब्का
हंवामहंवावमूकाकवमामकी॥ थनदिगवंधनमंत्र॥ नमो
ॐ सुमुनीसुमुकुरु॥ ॐ गृह्णह्णकुरु॥ ॐ गृह्णापयह्ण
कुरु॥ ॐ ज्ञानयहाकगवनविद्याराजकुरु॥ पूर्वादिकृष्ण
श्यामवकुपीनकाकाश्या उलूकाश्या श्वानाश्या गृध्राश्या
जमदाग्निजमदग्नि जमदग्नी जमथनी भदनीवजीरव
वजावंकु॥ ॐ वज्रपाकायकुवकु॥ ॐ वज्रपंजलकु॥ वज्रवि
मानकुवकु॥ ॐ वज्रसपजाप गासंकावज्रज्वालानलाकाकु
कुरु॥ ॐ घघघाटय२ सर्वदुष्टानकुरु॥ ॐ कीलय२ सर्वपापो
नकुरु॥ ॐ कुं ३ वज्रकीलयवज्रपाशाकुरापयनिसर्ववि
घ्नकायवाकचित्तकीलय२ कुरु॥ ॐ वज्रमुसपवज्रकील
यमकीटय२ कुरु॥ महासूक्ष्मी विन्दथन॥ ज्वालावली॥
वज्रावली पद्मावली पूनसुमुनीम्यादी॥ ॐ मिदिगवंधन॥
पूनषट्गन्याश॥ ॐ पृथिवसी॥ ज्वालाललाट॥ ॐ दक्षिणकर्ण
शिवपृष्ठ॥ ॐ वामकर्ण॥ नाकमध्य॥ ॐ वक्षहृदया॥ लोचा
कुहृदया॥ कांकुहृदया॥ ॐ कनथा॥ । नेत्रा॥ कानासिका॥ कं
ठ॥ लंकंठ॥ कांहृदय॥ क्षिमस॥ प्रिलिंग॥ गुगुह्य॥
ॐ उरुहृदया॥ सुजंघया॥ नपादया॥ शिपादपृष्ठ मपादग्र

लया॥ आँजानूह्रा॥ ॐ मित्रगु विंशा मित्राशा॥ पीं अपपीठ क्रशा
पक्रपक्रपक्रपा मपापक्रामपापक्रा अगानापक्रअगान॥ मंध
ॐ गुह्यं धर्मा द्वयमंध॥ हुंकार॥ नदनुह दिस्थि मुहुंकालव
सिमुदासहार्य मुक निष्ठ यवनस्थि माजुना दिसी द्विधीमनुषी
धीचक्रसम्वर समादेयं आकर्षयन्॥ पाद्यादिमंत्र॥ ॐ हुं ३
अयवसन्दाचायपाद्यावमनार्घपुष्पधूपदीपगन्धस्वाहा॥ ॐ अहुंवहा ॐ
आ हुं॥ ॐ धीवज्र हुंमुक्क हुंकट जाकिनीजालसम्वरस्वाहा॥
ॐ हीं हुंकट॥ ॐ ॐ ॐ सर्ववुद्ध जाकिनीयवज्रवशुनीयवज्रकला
चीयहुंहुंहुंकट कट कट स्वाहा॥ मंध॥ ॐ जाकिनीयहुंकट स्वा
हा॥ ॐ यात्मायहुंकट स्वाहा॥ ॐ रक्षुयाहायहुंकट स्वाहा॥
ॐ चुपिनीयहुंकट स्वाहा॥ दिग्मावर्कंय॥ ॐ वज्रदशाटकाय
हुंकट स्वाहा॥ ॐ समयदशाटकहुंकट स्वाहा॥ ॐ विस्मयद
शाटकहुंकट स्वाहा॥ ॐ समयाविस्मयदशाटकहुंकट स्वाहा
। दिग्मावर्कंय॥ ॐ कध २ हुंकट स्वाहा॥ ॐ वज्रयुयहुंकट
स्वाहा॥ ॐ कुरु २ हुंकट स्वाहा॥ ॐ वज्रादिसियहुंकट स्वाहा
ॐ वध २ हुंकट स्वाहा॥ ॐ कामसयहुंकट स्वाहा॥ ॐ त्रासय
हुंकट स्वाहा॥ ॐ महानागायहुंकट स्वाहा॥ ॐ शोषय २ हुं
कट स्वाहा॥ ॐ वीयमसयहुंकट स्वाहा॥ ॐ द्रां २ हुंकट स्वाहा
ॐ खवल्यहुंकट स्वाहा॥ ॐ हवर २ हुंकट स्वाहा॥ ॐ लर्वकंधरी

यङ्कं कं स्वाहा ॥ ॐ ॐ २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ कमलायै ङं
कं स्वाहा ॥ ॐ कं कं २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ नेत्रावत्यै ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ दं दं २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ महाश्वेतायै ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ पं पं २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ वायुश्वेतायै ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ कं कं २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ वसुधारिण्यै ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ सुवासकुश्यै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ पृथ्वी
ङं कं स्वाहा ॥ ॐ सर्वपापालस्वङ्गा सर्वपापवाम
र्यै २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ ध्यानमाहात्म्यै ङं कं स्वाहा ॥
ॐ आगम २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ सूकदायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ
ह्रीं २ ङं कं स्वाहा ॥ ॐ हयग्रीवायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ श्रीं २
ङं कं स्वाहा ॥ ॐ रवगानमायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ श्रीं २ ङं
कं स्वाहा ॥ ॐ चक्रवर्मायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ हां २ हां ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ रक्षुपाहायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ हां २ ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ अभिषिक्यै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ ङं ङं २ ङं कं
स्वाहा ॥ ॐ चक्रवर्मशीर्षायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रि २
ङं कं स्वाहा ॥ ॐ महावीर्यायै ङं कं स्वाहा ॥ ॐ कालाकाशायै

ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ उल्काऽभ्याय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ धूमाऽभ्याय ह्रूं
फट् स्वाहा ॥ ॐ शुल्काऽभ्याय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ यमतादि ह्रूं फ
ट् स्वाहा ॥ ॐ यमदूतीय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ यमदंष्ट्रीय ह्रूं फ
ट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रप्राणऽभगानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ प्राङ्गलऽभ
गानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ आलीढकुऽभगानाय ह्रूं फट् स्वा
हा ॥ ॐ अक्षुभीवऽभगानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ अट्टहासऽभ
गानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ लम्बीवक्षुऽभगानाय ह्रूं फट् स्वा
हा ॥ ॐ घोराऽन्धकऽभगानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ किलि २
ऽभगानाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागतसुखलिङ्गविला
सनामिन शीघ्रकसम्भव महाबलाय ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रपू
ष्पाणि फट् स्वाहा ॥ यद्भगवान्यास्यामि ॥ धातुगभास्या
ॐ वज्रसत्त्वसंगाहक वज्रमनुनय वज्रधर्मकायवन
वज्रकमकुरुव ॥ ॐ वज्रवीर कुरु वज्रवंश ॥ वावज्रामृ
दरा ॥ ॐ वज्रमुद्रे ॥ ॐ वज्रहास ॥ ॐ वज्रमाल्ये वाव
ज्रगीते ॥ ॐ वज्रनृत्ये ॥ ॐ वज्रपुष्पे ॥ ॐ वज्रधूपे ॥ वावज्रा
लोके ॥ ॐ वज्रगन्धे ॥ ॐ वज्रदण्डे ॥ ॐ वज्रनृत्ये ॥ वा
वज्रधर्मे ॥ ॐ नमस्तु नमामि नमानमः ॥ ह्रूं स्वाहा वज्र
हास्वाहा वज्रे ॥ ॐ हिलि २ ह्रूं ॥ क्षान्तयाय ॥ ॐ नमवक्र
सम्बवाय ॥ ॐ कुवलयदलनील । अमुक्तमालाम्बरश्यामनील

महावायु वेगधानवाहा महाभदिनी मशुल ध्वजा धूमा
चलाशा पदीस्फीत पद्मासना सिनमाकान्दा वसवक्रिमा
ग समाकृष्ट गोपा स्फलद्वंद्वमा द्वनिमापद सूर्य्यवन्दा दि
ष्टवामन्दरेवाविना ॥ गा सिमानिकदेन्याकर लाकदमाकर
सर्वसंकाहर व्याघ्रवर्म्माम्बरं दुरन्दरं दुरन्दरं वीरगामीव
रुन्दावरुन्दाव हाहाकाव वापुर्शूसर्वाम्बर विश्ववजाद्र
चन्द्रार्द्ध शेखरं ध्वस्दमाहा चन्द्राव सूलावमहासंकाहरं
ज्वलवज्रघण्टासमाथ्य वसवाक्रु पुस्मापं गृष्टाद्वयक्लाव
गुप्तस्वलावगनालिंगन मक्रमामंगजवर्म्मावरं ॥ व्याघ्र
स्द द्वयविस्फुर पकशूलाद्य कर्म्मिज्वलन वज्रखड्ग
पाशकशवज्रमुशु कृविगनपाशिन पस्फुर मुञ्जगोमम
महानासमदा सिन व्याघ्रिनमोलिन वीवयंपाकाद्रव
कृ शिनरपाविन नृपुस्मावलिकृषनपाशस धावसंसाव
कान्दावसन्दाशिन मायाविदापन शीवजसन्वनम ॥ ॥
वामहस्दपूजा ॥ ॐ आ रवशुपाहुकृ ॥ अरवलरवहाया
य ॥ ॐ आ हूं ॥ चक्रवदनषट्कोपचाय ॥ ॐ वामकपाटक
गुप्तकावयन ॥ ॥ धान ॥ ॐ शुन्यमानन्दय चक्रपंव
हव पद्मापशिंग्य हृदय सूर्य्यमशुल वंकायापाशिना
भक्तकृपाविनामन वज्रवाराही समामशुलिपंकावयन ॥

॥ आद्य ॥ आद्यदर्शन पाद्यादि पूजा ॥ स्नानवाद्य ॥ ॐ वज्रवा
राही ह्यं स्वाहा ॥ ॐ हां धायामि ह्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मा हिनी स्वाहा
ॐ ह्रूं ह्रीं संवाशिन्यै स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं ह्रूं संत्रासन्यै स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं
वशिकायै स्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ आचमनीय ॥
ॐ नमो वज्रवाराही सर्वपापप्रशमनी ॥ मायाविध्वंसनीष्ट
दा वृद्धवरफलदायनी ॥ मर्दन ॥ ॐ ऋ ॠ ऌ ॡ उ ऊ मृ मॄ
ऋ ॠ ऌ ॡ आ आ आ आ ॥ हूं हूं हूं ॥ संध्यासिद्धवशंकर
शिवकवशापसंहारकर्ता कालिकाकिसर्वाकि हृदिस्थवन
मृगघनी विजयिसर्वदाक्षा विशाला वामदाक्षा कमलप
निशिव चक्रपुरुष्ठजाया कालाष्टकालिकाल्यापविगलसि
वसा मुकमुद्रा हस्ता मृणालीमुशिनांगी मुखगलदमृतं खा
दुमुकाननादा सर्वाद्रि क्रियास्या वरसुरगामना काठमू
लाननान्दा सानन्दा सानुरागा विविधवसयुता मद्यपयद्ध
नृत्या ॥ मृदाषमुशिनांगी व्यपगावसना घोरशाद्वलागी
सिंदुरावृक्षदेह वृसहपरगाषटवीरशीनायका प्रियास्या
नगाशृंगवस्वागकरणानाना विशालाक्षना शीसम्बाधि
विधाविधानकमुगावाराहिकावाशिशी सर्वसिद्धिप्रदा
यिका रुगावनी देवीनमसर्वदा यामिन्यारवल्लभाहनी
रुगावनी संवाशिशी सर्वदा सर्वसंहारसनी [illegible]पया

समला थाराजधरीवशिखा वज्रवीरा वज्रभद्र श्यामभद्र
शुक्लाः नीलासिनगोरिश श्यामावुमुसवुमुहाशनगंव
ह सदाशिवं॥ शुभकुशा स्वाम ॐ भ्रुकुटिखलावक
द्वालिनकल्याणिनर्जानमरुद वज्रपाशिनीः॥ थन जिल
जालरवनहायाय॥ ॐ संवादकजूरिषिचिन्तुमां॥ मकु
टहावया॥ ॐ ह्रूं दंसर्ववुद्धत्वयुष्माकपूजनायव॥
मकुटपंचकुलाकव सर्ववुद्धकुलमसिमहामकुटपरि
ष्कुस्वाहा॥ ॥ जंखलरवहायाय॥ मकुट॥ ॐ व
ज्रवाकिंकरीजूरिषिचिन्तुमां॥ ॐ वज्रवज्रीजूरिषि
न्तुमां॥ ॐ कर्म्मवज्रीजूरिषिचिन्तुमां॥ ॐ ह्रूं वज्री
स्व॥ ॐ मुमुमु वज्रमुष्यहा॥ ॥ जूयादिविषकल्प
मसिवुद्ध वज्रादिषकल्पः॥ ह्रूं दंसर्ववुद्धत्व गृह्णव
ज्रसूसिद्धय॥ वज्र॥ ॐ वज्रमिपानस्वामिरिषिवामि
ॐ मिष्टुवज्रसमयसत्वहाः॥ घण्ट॥ ॐ वज्रसत्वामिरि
षिवामि॥ ॐ वज्रनामादिषकल्प॥ शुहिवुद्धनामनथा
गतकुलवस्व॥ ॥ मकुटपाद्यादि॥ स्वानवाय॥
ॐ आर्यविलोचनायस्वाहा॥ ॐ आकाशायस्वाहा॥ ॐ वज्र
संकवायस्वाहा॥ ॐ भूमिनागायस्वाहा॥ ॐ आभाद्यसिद्धि
स्वाहा॥ ॐ वज्रपुष्पंपरिष्कुस्वाहा॥ पंचोपचारपूजास्तुति

३१

ॐ नमस्त्रैलोक्यबुद्धानां सुकाल्यादिकुलालय ॥ मध्यविलोचनं
नाथं पंचबुद्धनमस्कृतं ॥ विन्दुविद्य ॥ मध्यमा ॥ ॐ नमो भग
वते वीरवीरकधवायहुं फट् ॥ ॐ नमो महाकल्पाग्निसन्नि
भायहुं फट् ॥ ॐ नमो जटामकुटाटहासायहुं फट् ॥ ॐ दंष्ट्रा
कलालकीकरमुखायहुं फट् ॥ ॐ नमो सहस्रभुजकाकधवा
यहुं फट् ॥ ॐ नमो पद्मसूपाशत्रिशूलखड्गधारिण्ये
हुं फट् ॥ ॐ नमो वज्रवर्म्मास्त्रधवायहुं फट् ॥ ॐ नमो
क्रमांकधवपूषायहुं फट् ॥ ॐ नमो भगवन्वज्रवाराही
आर्य्यपद्मा जिन पुलाक्षमाल महाविद्यधरी सर्वभूत व
यावह महाबल वज्रासन अजिन अपराजिन कपर्द
ी नमस्तामसी विषमाषसी पाषसी काठसी कलापि
सी संगागनी मानिसी सुखादिनी पद्मजयी विजयी
जम्भनी मम्भनी वज्रवाराही महायाणधरी कामधरी
स्वजधरी हुं हुं हुं फट् स्वाहा ॥ अथ मूलमन्त्र
जापयाना मंडल ॥ वज्रवाराहीस्वरूपपूजा ॥ आदर्श
पाद्यार्घ पूजा ॥ स्नानवाय ॥ ॐ डाकिनीयस्वाहा ॥ ॐ या
मायस्वाहा ॥ ॐ स्वशुपाहायस्वाहा ॥ ॐ भूपिस्थेस्वाहा
ॐ वज्रकपाटकायस्वाहा ॥ ॐ समयकपाटकायस्वाहा ॥
ॐ विस्मयकपाटकायस्वाहा ॥ ॐ समयविस्मयकपाटका

यं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ वं वज्रवारी हीं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ हां या
मामिथ्ये हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ क्रीं मोहिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ हूं द्वी
संवामिथ्ये हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ हूं हूं संवासनी हुं फट् स्वाहा ॥
ॐ फट् २ वशिमुद्रायै हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पं पुष्पं स्वाहा ।
पञ्चोपचारपूजास्तुति ॥ ॐ सर्वज्ञज्ञानसंदोह अगाधार्थप्रका
शक ॥ विद्यामणिरिव शुद्धं सिद्धवचनमाश्रयम् ॥ ॐ नमो वाग्वी
वज्रधारिणी मन्दमूर्ति जिनेश्वरी मुखचन्द्रवदनारिमारक
विदुषिवाणिनि ॥ ॥ वामशुलाथिय ॥ सिद्धसिद्धे
अजकाकाय ॥ स्वाकाय ॥ स्मय ना थ मनविय ॥ माय
काल ॥ हूं मि मिसमाधिमहायोगाध्यान ॥ समाप्त ॥ ॥
थन मिसमाधिवली ॥ गरवजमावलिहायाक्ष ॥ ॐ आः हूं
वलीगुप्तविलावयन ॥ यंकाशम वायुमशुलं यंकाशम अग्नि
मशुलं ॥ कंकाशम मिमशुलं आकाशपद्मलाजनं ॥ मन
रुक्कादिकं ॥ ॐ हूं गंधीरव नामापांगांकं ॥ मदधिष्ठिम
पंचामृत पंचपदीप हहाहीं हंकावस यथाक्रम प्रकृत
गंधवर्ण दविधुमहस्था मनपाषालसवर्ण हूं सवाक्षा
मूरवामृतमय शुद्धवद्वाग विविद वनुपामृतः मदुपाचि
आकाशिज चंदाक्ष ॐ आः हूं वस्मिरि सर्वमथागमादि
गाधाधिविद्यामृत सागवादिमामृतमाकृष्य क्रमनाविधि

नमवलाक्षथम्॥ ॥आकर्षण पाद्यादि पूजा॥
वलिस्वानवाय॥ अमृतमातृकास्वरूपंपूजायाय॥ ॐ आदि
गवलिसमाप्तं॥ ॥थनकलपूजायाय॥ आवाहन
याय धूंआनावाक्ष॥ ॐ भगवन् श्रीमनुर्गीश्रीकलश
विघ्नेश्वर महाकाल आयुवृद्धि पञ्चरामामा श्रीलक्ष्मी
वेश्वानर सर्वाभिम आवाहनाय ॐ देवजयुपरिस्यादि
यामिनमानम॥ ॥ निलाञ्जनयाय॥ ॐ आ: स्वशुभा
हूं विघ्नाकृत ॐ सर्वविघ्न हन२ हूं फट् स्वाहा॥ वल
यामजा॥ ॐ आ: स्वशुभा हूं सर्वविघ्नक्षयापक्षयाभिकुरु
हूं फट् स्वाहा॥ गंधादक्षय॥ ॐ आ: स्वशुभा हूं फट् सर्व
विघ्नमन्त्रानपन हूं फट् स्वाहा॥ पुष्पाभावक्ष॥ ॐ आ: स्व
शुभा हूं सर्वपाप विघ्नमालाकस्मिकुरु हूं फट् स्वाहा
॥ सर्वय॥ ॐ आ: हूं स्वशुभा हूं सर्वविघ्न जलनाशय२
हूं फट् स्वाहा॥ सरिक्वत॥ ॐ आ: स्वशुभा हूं सर्वविघ्न
घुयस्थान सर्वाबाधाक्षय२ हूं फट् स्वाहा॥ आम्वत॥ ॐ
आ: स्वशुभा हूं सर्वविघ्नदीपदहनजलज्वालय२ हूं फट्
स्वाहा॥ स्व धूंहूंमाल॥ ॐ आ: स्वशुभा हूं सर्वविघ्नमल
प्रलय२ हूं फट् स्वाहा॥ गंधक्षय॥ ॐ मुद्रासर्वार्थसि
द्धि विमलधूमनङ्गलवाधिसल॥ प्रणाक्ष॥ ॐ आ: स्वशुभा

ॐ ज्ञानमिज्ञादीकल्यानम॰ध्यकल्यान पृष्ठ सान्दिकल्या
नस्वर्थं स्वव्यञ्जन॰ केवल॰ परिपूर्ण॰ पर्य्यवदान॰ ब्रह्मच
र्य॰ संप्रकाशयामि स्म॥ स्वालंकरनय॥ मुष्टासर्वार्थ सिद्धि
विमनसुमनसु॰ मङ्गलवाधिसत्व॥ ॥वज्रधिय॥
॥रत्नलंकरनय॥ ॥वज्रनृत्ते॥ ॥वज्रामृता॰॰॰॰स्वा
हा॥ ॥ग्रादर्वस॰ पादाघ॥ पूजा॥ स्वानवाय॥ ॥ॐ ज्ञाय्य
वलोकनायस्वाहा॥ ॥ॐ ज्ञाय्यायस्वाहा॥ ॥ॐ वज्रसंभवाय॰
स्वाहा॥ ॥ॐ ज्ञामिमालायस्वाहा॥ ॥ॐ ज्ञाघासिद्धिस्वाहा॥
ॐ लोकनायस्वाहा॥ ॥ॐ मामकीयस्वाहा॥ ॥ॐ पांडुनायस्वा
हा॥ ॥ॐ ज्ञाय्यमामायस्वाहा॥ ॥ॐ वज्रपुष्पंप्रतिच्छस्वाहा॥
गंगा॥ ॥ॐ गंगसपमियस्वाहा॥ ॥ॐ गंगसंधनायस्वाहा॥
ॐ गंगसपमिजिनायस्वाहा॥ ॥ॐ रत्नानदानायस्वाहा॥ ॥ॐ॰
वज्रपुष्पंप्रतिच्छस्वाहा॥ ॥ महाकाल॥ ॥ॐ महाका
लायस्वाहा॥ ॥ॐ कंकालायस्वाहा॥ ॥ॐ कीकालायस्वाहा॥
ॐ कंकालायस्वाहा॥ ॥ॐ वज्रपुष्पंप्रतिच्छस्वाहा॥ ॥
॥ सगंधी॥ ॥ॐ आयुवृद्धिस्वाहा॥ ॥ॐ भोगवृद्धिस्वाहा॥
ॐ पुत्रवृद्धियस्वाहा॥ ॥ॐ धनवृद्धियस्वाहा॥ ॥ॐ सन्मानवृ
द्धियस्वाहा॥ ॥ॐ वज्रपुष्पंप्रतिच्छस्वाहा॥ ॥गंगास
ॐ नंदायस्वाहा॥ ॥ॐ नंदायस्वाहा॥ ॥ॐ जयायस्वाहा॥

ॐ शाम्यायस्वाहा ॥ ॐ कपिलायस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पप्रतिष्ठ
स्वाहा ॥ ॥ इसर्व सिद्धाम्यु ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीयस्वाहा ॥
ॐ श्रीलक्ष्मीस्थानिवासिनीस्वाहा ॥ ॐ श्रीस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्प
प्रतिष्ठस्वाहा ॥ मम ॥ ॐ वैश्वानरायस्वाहा ॥ ॐ मानरक्षा
यस्वाहा ॥ ॐ प्रमदायस्वाहा ॥ ॐ पूर्णकदायस्वाहा ॥ ॐ धन
दायस्वाहा ॥ ॐ भगवतायस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पप्रतिष्ठस्वा
हा ॥ पञ्चापवाववास्यापूजास्तुति ॥ ॐ नमस्त्र पञ्चवृक्षस्य
मूलाल्पाटिकूलमय ॥ सर्वविलावननाथ पर्ववृक्षनमस्तु ॥
॥ गस्तुति ॥ ॐ विघ्नेश्वरायवीरायवीरेश्वरूपायनमः ॥ सर्व
विघ्नहरंदेवगणाधिपनमस्तु ॥ ॥ महाकाल ॥ ॐ
कृष्णवर्णं समावृत वृक्षासवदनकृत ॥ कवनिकपाल
धरनाथ महाकाल नमस्तु ॥ सगाथा ॥ ॐ आयुवृद्धि
यशोवृद्धि वृद्धिपल्लासुखस्तथा ॥ आविष्य धनधान्यगुण
सन्तान संतुनसदवृद्धिरस्तु ॥ पञ्चगामाला ॥ ॐ नदाक
डाकयासाम्या कपिलाविकृपावनि ॥ प्रसिद्धिवसहालक्ष्मी
आयुवाधाग्यसंपद ॥ लक्ष्मी ॥ श्रीलक्ष्मीमहादेवी सर्वस
पत्तिदायनी ॥ सर्वकाम प्रदादेवी श्रीलक्ष्मीनमस्तु ॥
॥ मम ॥ ॐ वृद्धसंवीरसंज्ञान वैश्ववसु महाकाल ॥ वैश्वा
नरमहवद्ध सर्वसंपत्तिदायनी ॥ स्मयक्षाय ॥ थ. स्वा.

३०/

मनविय॥ मायहाल॥ ॐ धर्म्मावाहनुपकावाहनुमषां
मधाग॥ ॐ वजीषांवथा मियाध ॐ वंवा दिमहाशम
त्र॥ ॥ कलशपुजासंपुर्ण ॥ ॥

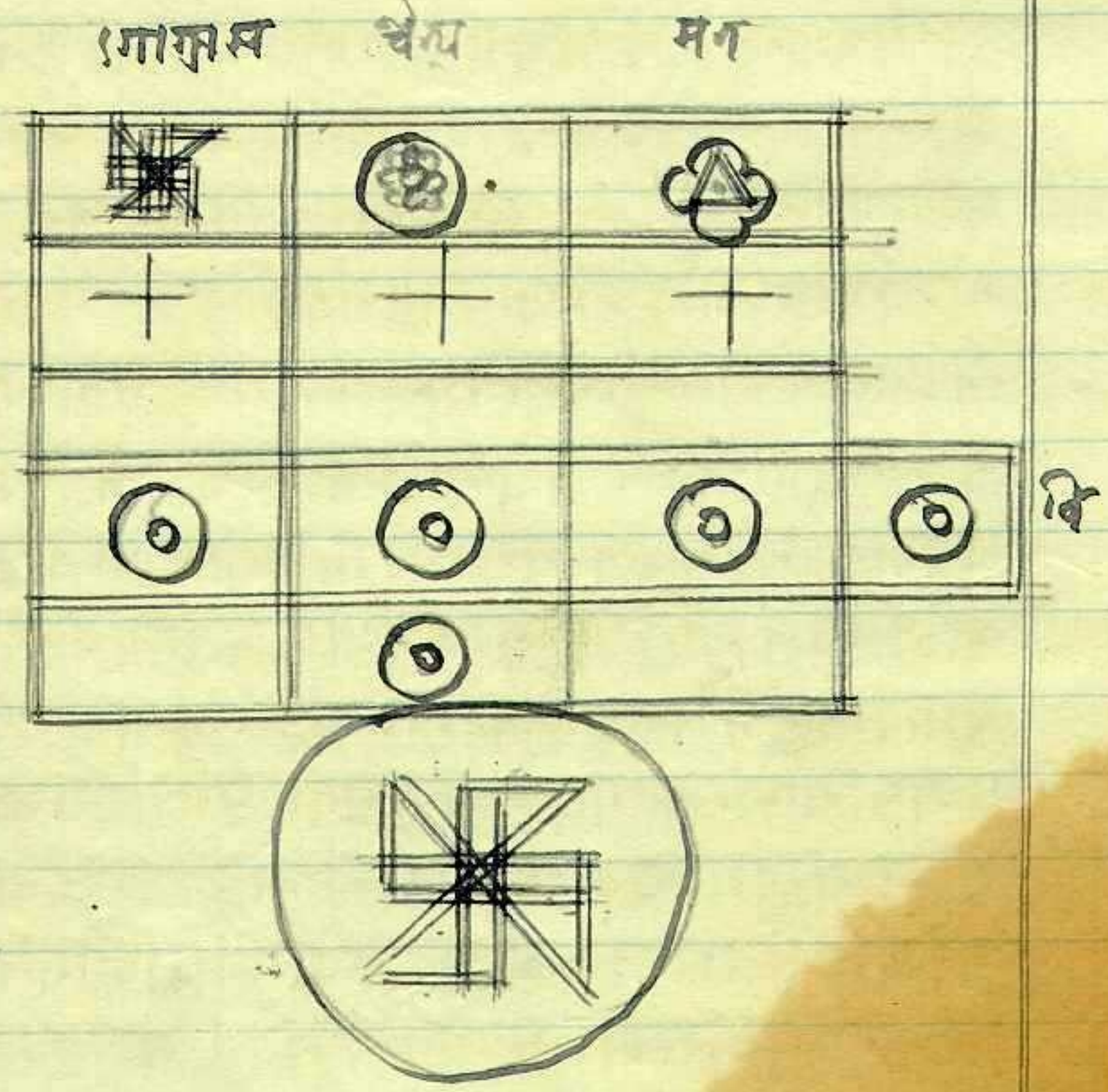

उनमाशिवजसत्वाय॥ ॥ अथ पिंडक्रियाविधि ॥

आपाद्य पूजाकुल॥ सिद्ध आसु सिद्ध अजाका स्वान
पश्चस्वां उष्कास्वां॥ धस्वां ऊस्वां ऊना सिसारुल क
मामु ज्वा ख्व चाकुमधि ॐ हामा पंचामृत साइनु
आरथा गांय पाला फुलालपंग॥ नगबाज॥ किलाय
स्यं छा ला थ अुसला गाग्रास सुकुशु धवडि
आगवा ही मिथलंख गाग्रमासियाला थुलि पिंडुया
आलमाल॥ ॥ थनक्रिया पिंडुसालादयक्ष॥ ॥
थनसूर्यार्घयाय॥ उआवमरपमिक्षस्वाहा॥ हृदयस्वाहा
शिरस्वाहा॥ कायविशोधनस्वाहा॥ पादप्रक्षालनस्वाहा॥
प्रक्रियार्घपमिक्षस्वाहा॥ सूर्यायानसिकलंमिक्ष॥ श्रीसूर्या
यनक्रशुनंनम॥ श्रीसूर्यायनकपुष्पंनम॥ स्वांआकिंद
यासिनमय॥ उमशीधनीवजीनी महापनीसय धनीय
नक्र२मांउआ हुंफट्स्वाहा॥ स्वांआदि कशहमाविय
अयक्षाय॥ उनमाबुद्धाय उनमाधर्माय उनमासंघा
य॥ नायक्ष॥ सूर्यवंशय विराजमान श्रीशाक्यसिंह
मथागनपर्यायां रुद्रकल्प सहनामलोकधाती वैवस्वम
चक्रव सम्यक्संबोधाय कालियुगे प्रथमचरणेकल्प
स्वस्थुक्रपावाय हसवसाद वालसूर्दीक्रश उपछंदा

पीठ आर्यावलोकेश्वरभूमौ कर्कोटक नागराजाश्रय नागवा
सिनिमहाह्रद श्रीस्वयंभूचैत्यस्थान श्रीगुणकरंडपीठ
पावामिताधिष्ठित श्रीमञ्जुश्रीयाधिष्ठितभूमौ नेपाल
मण्डल श्रीसम्बरकालमण्डल सुवर्णभूमौ समीप
मणिलिङ्गेश्वर गोकर्णेश्वर कीलेश्वर कुमुदेश्वर ग
ङ्गेश्वर रुद्रेश्वर गन्धेश्वर विक्रमेश्वर अष्टक
नागपरिवृत ॥ वागमति कलावती मणिमती पद्मावती
महानदी प्रवाहित पुष्पतीर्थ चन्द्रतीर्थ चंद्रवतीर्थ
राजतीर्थ मनोरथतीर्थ निर्मलतीर्थ निर्वाणतीर्थ सु
नतीर्थ विद्यामणितीर्थ प्रभाटतीर्थ सुलक्षणतीर्थ
जयतीर्थ उपतीर्थ परीवृत आनन्दभैरव संवाद
कुलाद्य आनाद बहुप्रकार सप्तमूर्त्याधिष्ठित वज्र
योगिनी गणेशभूमौ अष्टमातृकाष्टभैरव सिद्धिनी या
द्धिनी गणेशकुमार महाकाल हाटकी हनुमन्त दक्षा
कार परिवृत नवनेपालमण्डलाधिगत श्रीमदार्या
वलोकितेश्वरविजयनाथ ॥ सूर्यसुस्थितामम यथा
यथानाम सम्बत् सव यथामास यथातिथि यथानक्ष
त्र यथायोग यथाकरण यथामुहूर्त यथावार यथा
सूर्य यथाराशी चन्द्रमसी दानपति ऋजमानस्य च

पालमशुलांनवगाम ललिटपकूल महानगरीयु धाम्रम
ग्रामनामम महाविहारान उत्तरदिग्रा स्थनिवासिन गो
कुम गागान्यत्रस्थ यथानामम ध्य सकल अहार सप
निवार सर्वथा सचित आयुरारोग्य कुटुम्बादि धुरुरु
लपाद्धिकामनया यथाशक्ति करुलपाद्धिकामनार्थ नि
पक्ष पिण्डदान करणार्थ ॐ श्रीसूर्याय अर्घनम पद्मा
र्घनम पादोपादार्घनम ॥ धूपं गन्धम श्रीसूर्यायनक धू
पनिर्यातयामि ॥ पादार्घनय ॥ श्रीसूर्यायपाद्यअर्घ आ
चमनंपानिकस्वाहा ॥ स्नानवाय ॥ ॐ आदित्यायस्वाहा ॥
ॐ भास्करायस्वाहा ॥ ॐ भुवनायस्वाहा ॥ ॐ रवयेस्वाहा ॥
ॐ वृस्यमिस्वाहा ॥ ॐ शुल्दायस्वाहा ॥ ॐ आनिष्ठवायस्वा
हा ॥ ॐ चा हुस्वाहा ॥ ॐ भानुवस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पपुनि
कस्वाहा ॥ आसूसिद्धनिक ॥ श्रीसूर्यायनक वस्त्रनम
अजंकाष्ठाय ॥ ॐ श्रीसूर्यायनक यज्ञोपवितनम ॥ स्वांगु
स्वाष्ठाय ॥ ॐ श्रीसूर्यायनक पुष्पनम ॥ स्नानयाय ॥ ॐ सू
मुखवेवदन्तश्च कपिलाग्रकर्णक ॥ लम्बोदरश्चविगना
विघ्नराजो विनायक ॥ धूम्रकेतुगणाध्यक्ष फालचन्द्र
आनन ॥ वक्रतुण्डश्चसूर्पकर्ण हेरम्बस्कन्दपूर्वक ॥ षोडशि
नामानि पठेत्सिद्धियाविव विघ्नारम्भविवाहेषु प्रवि

ह्रः निर्मिमन्त्रथा ॥ संग्रामसंग्राम ॥ अथवविघ्नकरन जायगां
उंजवाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं ॥ नमोविसर्व
पापं प्रशमामि दिवाकरं ॥ थूलिकर्मायायन ॥ पिसाचि
धायध्वं ॥ मुख कायं ॥ गुरुपादार्घमय ॥ पूजारञ्जन
ध्वं ॥ गुरुमशुलदनध्वं ॥ लोकपालवलिपूजा धूनकाउ
समाकरवाना विसर्जनयाय ॥ थूलि धूनकाउ ॥ कावलास
कुल १ आदि ॥ कुल १ वाजि ॥ कुल १ कुव साहु पंचा
मृत हामा साधो साधो ध्वजा याकुमधि कुश ॥
थूलिमयाउ ॥ आवनयाय ॥ मन्त्र ॥ ॐ नमोरगावगस
वहुर्गानिपविआवनवाजाय नथागतायां हंद सम्यकसं
बुद्धाय ॥ मन्त्रथा ॥ आवन२ विआवन२ सर्वपापविआ
वनस्वाहा ॥ कवला रक्षाया निंजया ॥ पूर्वस्वकाउ मुख
कायं ॥ ॐ मिलाहुस्यमिमुद्रावकुआनवकुआनथा ॥
मधुना नासिकावाहु ॥ क्षीरादास्याघृताहवं ॥ दधिवक्ष
हिजानुस्या भायन हस्तपादथा ॥ मुत्रादासर्वाताना
आयन वाधिविर्यवान ॥ ॥ कुशनंडाल ॥ मुत्राम्बुज
कुशोत्रानि मधुसर्पि मिलनथा ॥ दधिरक्षुपवाणा
का मुखाङ्ग पिशुसंरुवा ॥ थनआदि निनर्क ॥ पिशु
हानमुहकथा मि वायध्वं ॥ थन कायध्वं ॥ पिशुना

गान्द्रियर्द्धा॥ यथमर्शी धर्म्मवानुवागीश्वराय पिशुनागां
स्वाहा॥ ॐ वृद्धपविनामह यथानामन पिशुनागांस्वधा
ॐ पपिनामह यथानामन पिशुनागांस्वधा॥ ॐ पिनाम
ह यथानामन पिशुनागांस्वधा॥ ॐ स्वपिनायथानामन
पिशुनागांस्वधा॥ ॐ विकवाय पिशुनागांस्वधा॥ थन
पिशुस्काय॥ सद्यमांसगङ्गसथन॥ हामलंहायाय॥
गाहावायर्द्ध॥ थन चेल्य गाणास मन थूलियाम कू
ञासनमथ॥ वाक्ष॥ मूयाहि॥ यथाम नथागनायो
पूर्वगमन्य स्वपविपाविना दक्षिणा गीमूव पिशुयिन्वा
विपाश्विनाश्वमायाशिखिना विकवसुन्दथा॥ कुकुक्ष
श्च प्रसन्नाया श्वमाया महाबला कर्णकाक्ष स्यश्व
न्दा शीमन्काश्यप स्यवपुरसन्ना गाक्षसिंहस्य वृक्ष
नाशिदशाश्वना नृनश्वपमूखानां ॐ इदमासनमाशिना
मूयंधर्म्ममनुवागीश्वराय कुशासन मूपनिस्किना॥
पञ्चगाजाय कुशासन मूपनिस्किना॥ ॐ वेश्वानवाय
कुशासनमूपनिस्किना॥ पूलालपनलाय॥ ॐ वसूधरी
पनपनिस्यस्वाहा॥ लंखनहायाय॥ ॐ ऋषिवाजिस्य
स्वाहा॥ स्वांजाकिनथ॥ ॐ सूपुथस्यस्वाहा॥ गाहानि
नथागवनायाय॥ ॐ भूधिपनपनिस्यस्वाहा॥ थनचेल्य

यामपंचामृतनंगूलकाउंमानकं ॥ ॐ ॥ वाक्ष ॥ ॐ यथा
पूर्वाधिसत्व चर्य्यायां चवाम मामापितृ पूर्वगमस्य सफ
पुरुषस्य सफनिश्चस्य पुष्पनुविधाकमार्थ जोकमणाति
स्य ॥ ॐ मुस्मनधायक्ष ॥ यजमानस्य नमिनडुवासनिवासट
धिसघृत समधू सरक्षुसर्वापकरश सहिनाय यादिसं
घंपयक्षामि सकृनार्थ नशुलपयक्षामि ॐ यंशीधर्म्मधा
गुवागीश्वराय सूपानिस्ठनवजस्वाहा ॥ ॐ पंचगामाग
यसूपानिस्ठवजस्वाहा ॥ ॐ कथानवायसूपानिस्ठनवज
स्वाहा ॥ ॥ ॐ निस्ठापन ॥ चेलयाम गागास मन
याम स्नानयाक्ष ॥ ॐ यन्मंगलंसकलसत्व हृदिस्ठनस्य
सर्वात्मकस्य सर्वकुलाधिपस्य निश्चयसत्व जनकस्य
महासुखस्य नन्मंगलंलवनुग पयमाशिधक ॥ ॥
साडुनस्मान ॥ ॐ लक्ष्मीधनकाञ्चनपवगाल फलाक्षनाथ
गिमिलंपहीन ॥ वृद्धाविवृद्धावुजपगनगनमंगलंलवनुग
पयमाशिधक ॥ पंचामृतनस्मान ॥ सामिलासद धिसघृत
समधू सरक्षु सर्वापकरशसहिनाय नडुपयक्षामि
लंवक्षनुनय ॥ ॐ पुन्यश महापुन्यजुपवमिनपुन्य जुपव
मिनायुपुन्य स्नानसकाग पवित्र ॥ ॐ सर्वसरक्षानाय
पवित्रुद्धं धर्म्मगगगगाश समुगनि स्वकावविशुद्धं महान

यथविषाकस्वाहा॥ ॥ ह्रसकंकन॥ ॐ पनि विम्बूस
माधर्म्माज्ञाकाशुद्धा श्लाविला॥ ज्ञाग्रा ज्ञ अनुकंपावरुणु
कर्म्म समुद्भव॥ ज्ञ शिष्यकाय॥ चल्पथियाज्ञाय॥ ॐ
नमोरुगवर्ग चत्वकंगुवाज्ञाय मथागताया हंसम्यकस
बुद्धाय॥ मथथा॥ सुभ२ भाद्रि२ दाद्रि२ ज्ञुनावस्व मनस्व
महामज्ज निलालंब निलाकुल निवाल सर्वबुद्धानांधि
ष्ठितस्वाहा॥ ज्ञुन्याय॥ पादार्घमथ॥ स्वानवाय॥ ॐ ज्ञाय्य
वलाचनायस्वाहा॥ ॐ ज्ञुक्लाम्बायनमस्वाहा॥ ॐ चत्वसंक
वायनमस्वाहा॥ ॐ ज्ञुमिनाक्षायनमस्वाहा॥ ॐ ज्ञुमाघ
सिंहयनमस्वाहा॥ ॐ ज्ञाय्यनाथायनमस्वाहा॥ ॐ भावना
थनमस्वाहा॥ ॐ पाशुनायनमस्वाहा॥ ॐ मामकीयनम
स्वाहा॥ ॐ वज्रपुष्पंपनिक्कस्वाहा॥ गाज्ञासयाम॥ ॐ नन्दा
यनमस्वाहा॥ ॐ रुद्रायनमस्वाहा॥ ॐ जयायनमस्वाहा॥
ॐ सोम्यायनमस्वाहा॥ ॐ कपिलायनमस्वाहा॥ ॐ वज्र
पुष्पंपनिक्कस्वाहा॥ मगयाम॥ ॐ वज्रधानवायनमस्वाहा
ॐ मानिरुद्रायनमस्वाहा॥ ॐ पूर्णरुद्रायनमस्वाहा॥ ॐ
धनदीपायनमस्वाहा॥ ॐ वज्रपुष्पंपनिक्कस्वाहा॥ धन
धूक्कयानय॥ ॐ ॐ दनपवमगंध पविमंपापनाशन॥
ज्ञापदाहवम निर्मलश्री निरुद्ध सर्वदा॥ सिद्ध सिद्ध॥

ॐ चन्दनसिंह पुण्यं पवित्रं पापनाशनं ॥ आपदाहरणं विष्णो
लक्ष्मीस्थिरत्वं सर्वदा ॥ ॐ ॥ ॐ सूर्यं परमं वस्तु
सहस्राथाजिनीमथा ॥ यक्षपवीनाय मुख्यं ददामि परमं पदा
॥ स्नानस्थाय ॥ ॐ मालती माधवी जाति मांदारव चंपकादिभि
कुन्दादिपुष्पसंयुक्तं नानापुष्पमालिकाः ॥ धोवाजिस्थाय
ॐ दधिक्षीरमन्नदानपारमिता पूजामघ समुद्रफलनसम
यह्नं ॥ फलफल ॥ ॐ लंगमवु कुंकुमालदालिंबादिफ
लादय ॥ कर्कमिवुनमालंगनानि फल धारयन् ॥ धूप ॥
ॐ धर्म्म २ धूपध्यानपारमिता पूजामघ समुद्रफलनसमय
स्वाहा ॥ मन ॥ ॐ ज्वाल २ ज्वालय २ दीपदानपारमिता पूजा
मघ समुद्र फलनसमयस्वाहा ॥ गायनपूजा ॥ ॐ गन्धे २
शीलपारमिता पूजामघ समुद्रफलनसमयस्वाहा ॥ आस्वा
लक्षय ॥ ॐ मुन २ महामुन सुखावस्थामनुगच्छ स्वाहा ॥ स्ना
नयाय ॥ ॐ नमस्त्र पंचबुद्धेभ्य सूक्ष्मास्वादिकुलगुय ॥ मध्य
वपावननाथ पंचबुद्धनमस्तु ॥ ॐ नदाम्दाजयासोम्या
कपिपावकृपावामि ॥ पुसिवस्तु महालक्ष्मी आयुवाग्य
संपदं ॥ ॐ बुंजस वीजसंजामपीलवस्तु महाज्वल वंध्या
नलमहवंद सर्वसंपाक्रिदायकं ॥ सकल्प ॥ ॐ अथादीमा
न संकल्पवासिद्धिवस्तु ॥ धनपुत्रिकानकारवायकं ॥ कुशाम्

मुनक्षायक्ष ॥ पूर्णिकायामकुशासनमय ॥ मुद्रादि ॥ यथाग
मथागमायां पूर्वाभिमुख: शापविषाविनाशक्रिया श्रीमुखपिशु
यिन्नाविषक्रियादेवनाया शिखिया विष्वसुवस्मथा ॥ कुकु
ष्ठरपसन्नाया देवनायामहाबला कनकाक्षस्यदेवद्वार्शमिमु
क्षाख्यपरपव प्रसन्ना शाक्ष्मिंहस्य वज्रदाम्निदमठधरा रूप
देवपमुखानां मिदमासनमाक्षिणा ॥ वृद्धपपितामह यथाना
मन कुशपूर्णिकामुपमिष्टुना ॥ प्रविनामह यथानामन कुश
पूर्णिकामुपमिष्टुना ॥ पितामह यथानामन कुशपूर्णिकामुपमि
ष्टुना ॥ पितामह यथानामन कुशपूर्णिकामुपमिष्टुना ॥ नि
लादक्षविय ॥ ओंकुमगान वृद्धपपितामह ॐ कुशनि
लादक्षार्घस्वधा ॥ ओंकुमगान प्रपितामह ॐ कुशनि
लादक्षार्घस्वधा ॥ ओंकुमगान पितामह ॐ कुशनि
लादक्षार्घस्वधा ॥ साधुविय ॥ ॐ क्षक्षनि २ भावनी २ भाव
नी २ भावनी २ पमिहनय क्षविय स्वधा ॥ पवामृतविय ॥
ॐ सामिवाय सदधि सघृत समधुसखशु सर्वोपकरण
सहितायस्वधा ॥ लंखविय ॥ ॐ पुण्य २ महापुण्य अपव
मिनपुण्य ज्ञानसंभाराय क्षयक्षविय स्वधा ॥ श्वमनाभिक्ष ॥
ॐ चन्दनचरुत्रा दिवलपालामिनापूजाभघ समुद्रहल
नसमयस्वधा ॥ ॐ संक्षानय ॥ ॐ सर्वाविघ्नसर्वापाया विघ्ना

धनीवृ आलंकारयज्ञोपवीतायज्ञीलपात्र मिनापूजामघ
समुद्रफलनसमयस्वधा॥ गंधाभिज्ञ॥ गंधवाजिकाय॥
ॐ गंधवाजिपुष्प गंधवाजिगत्थक्व विविधपुष्पदानपात्र
मिनापूजामघसमुद्रफलनसमयस्वधा॥ धोवाजिकाय
ॐ दधिक्षीरघृतदानपात्रमिना पूजामघसमुद्रफलन
समयस्वधा॥ फलफूल॥ ॐ लंगामधूकंकुदालिम्बानि
फलादय कर्कनिचूलनालंगा बनानि फलधोषयन॥
॥ धूप॥ ॐ धर्म्म२ धूपध्यानपात्रमिना पूजामघ समुद्रफ
लनसमयस्वधा॥ मन॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाग्निज्वाल२ ज्वालय२ दी
पदानपात्रमिनापूजामघ समुद्रफलन समयस्वधा॥
॥ नालनंफल॥ ॐ चाक्ष२ शीलपात्रमिनापूजामघ समु
द्रफलनसमयस्वधा॥ आद्यमंत्र॥ ॐ मुनि२ महामुनि
सुस्वावल्यामनुगाङ्कुस्वधा॥ स्नानपात्र॥ ॐ नमस्कृत्या
कर्मांगाय धर्मावक्र पवर्कम॥ गंधामुद्र स्नान स्वाधि
ष्ठाधयंसर्वदुर्गानि॥ संकल्प॥ यथा दीमाल्य सुत्रेन संक
ल्पना सिद्धिरस्तु॥ स्वर्गलोक संपाद॥ ॥ थन्नापिशु
यानकृतानथ॥ वाक्य॥ यजमानस्य गोकर्मगाणि स्य
पिनाकृत गिपक्ष पिशुदानावशकर्मल॥ यथाल गथा
गनायां पूर्वगमस्य सापनिपानिना दाक्षिणाकीमुखपि

शुचिन्नाविपश्चिनदिवगाया महावला कनकाक्षस्यदेवदा
शीमन्काश्यपप्रसंना आक्षसिंहस्य वृक्षदामिदं शक्यना
नमदेवप्रमुखानामिदमासनमाशिनां॥ वृद्धपिनामहयथा
नामनपिंशुयकुशासनमुपनिष्ठिनां॥ प्रपिनामहयथानाम
नपिंशुयकुशासनमुपनिष्ठिनां॥ पिनामहयथानामनपिंशु
यकुशासनमुपनिष्ठिनां॥ पिनादिशुगमयथानामनपि
शुयकुशासनमुपनिष्ठिनां॥ पुलालपलाय॥ उवसुध
पिपलपालस्यस्वधा॥ लंखनंहायाय॥ उऋषिवातस्यस्व
धा॥ स्वांडाक्षिनय॥ उसुपुष्पस्य स्वधा॥ पलाशवनायाय
उऋषिपलपाजस्यस्वधा॥ थनपिंशुवजायाल पवासुनन
पलाशा आनंदा॥ वाक्ष॥ दानयनिकाय॥ यजमानस्य गोक्ष
मगोत्र पितृक्षाशिपक्ष पिंशुदानार्थ क्रियाकुमे॥
यथापूर्वाधिसन्वच्यायां वयि मामापितृ पूर्वगाभस्य
सपद पुरुषस्य सपदनिष्ठस्य युष्मनविधानाथ गोक्ष
गोत्रस्य॥ अस्मनधायक॥ अस्समन यजमानस्य पि
नडुला सनिला सदधि सघृत समधु सरवसु सर्वाप
कश सहिनाय यदिसंघ प्रयच्छामि सबृहनाथ नडु
ल प्रयच्छामि अयंवृद्धपिनामह यथानामन पिंशुस
पनिष्ठिनां॥ प्रपिनामह यथानामन पिंशुसूपनिष्ठिना

पितामह यथानामन पिंडसूपनिष्ठिता॥ सापिलादिडा-
गमयथानामन पिंडसूपनिष्ठिता॥ मिलादकविय॥ गो-
कुमगमिलय वृद्धपितामह यथानामन ॐ दकुंभमिला-
दकंस्वधा॥ गोकुमगमिलय पितामह यथानामनकुंभ-
मिलादकंस्वधा॥ गोकुमगमिलय पितामह यथानामन
कुंभमिलादकंस्वधा॥ गोकुमगमिलय सापिलादिडागम
यथानामन ॐ दकुंभमिलादकंस्वधा॥ साडुबुविय॥ ॐ
कंकनि२ भावनी२ भावनि२ भावनि२ पानिहकुयंकनिय
स्वधा॥ पंचामृतविय॥ ॐ पंचामिला सदधिसघृत समधु
सरक्षुसर्वापकवशसहितायस्वधा॥ लंखविय॥ ॐ पुष्प२
महापुष्पजूपपमिनायपुष्प स्नानसंगायायकुयंकनीयस्वधा
॥ स्नानमालागय॥ ॐ पिंडुगावस्वधा॥ सिद्धलंनिर्द्ध॥
ॐ चंदनचंदनानि वरपापमिनापुजामय समुद्रफल
नस्वधा॥ ॐ अंकाक्षाय॥ ॐ सर्वविसर्वापाय विशोधनि
बुध्यालंकारयक्षा प्रवीनाय शीलपापमिनापुजामयस
मुद्रफलनसमयस्वधा॥ गंगाजलिमनाजस्थाय॥ ॐ
गंगाजपुष्पंगंगाजमत्थे वचविचिलशीलपापमिना पुजा
मय समुद्रफलन समयस्वधा॥ रंभावजस्थाय॥ ॐ दधि
चंद्रामुन्न दानपापमिनापुजामय समुद्रफलन समय

स्वधा॥ फलफूलस्थाप्य॥ उलंकामधुरुं॥ गावदालिंवनिरु
लादय॥ कर्दमि चूनालंगा वनानिफल वाश्यन॥ धूप॥
ॐ धर्म्म२ धूपधानपावमिना पूजामघ समुद्रफलनसमय
स्वधा॥ मन॥ ॐ ह्रीं आ आ आ ज्वल२ ज्वालय२ दीपदानपाव
मिनापूजामय समुद्रफलसमय स्वधा॥ गायनहाल॥ ॐ वा
ॐ२ शीलपावमिनापूजामय समुद्र फलनसमय स्वधा॥
॥ आस्वालंकय॥ ॐ भूय२ महाभूय२ सुखावल्यामनुगाछंतु
स्वाधा॥ ध्यान॥ ॐ नमस्क आचार्य सिंहाय धर्म्मचक्रपवर्त्तक
प्रभावुद्धजानस्वामि आधयन सर्वदुर्गानि॥ ॥ संकल्प
यथा दीमान संकल्पसिद्धिचस्तु॥ उक्तविरवासहियक्ष॥
विकलआठ॥ जूयादि॥ वाक्य॥ ॐ यथापूर्ववाधिसत्व
वर्य्यायांवयानि मातापितृ पूर्वगामय सप्तपूर्वाय॥
सप्तनिथस्य पूर्वान विधानार्थ गोक्रमगोत्रय अस्म
नधायकि॥ अस्मन यजमानस्य दिनं गइला सामिला
सेदाधि सघृत समधू सरक्तु सर्वापकरण सहिनाय
यदिसघ प्रयच्छामि सकृमाथ मंगुल प्रयच्छामि यथा
स्मिंकुलजाता अपूर्वाचाय वाधवा आत्मगार्ग विपूषा
कृष्णमूल कुलमम सुमोदकनपृष्ठ मृष्यन्मायाप
ना गामि सस्वानहीनमार्ग आधवाय आचा दि आचा दि

स्नानादि स्नानपिंडु पिंडलपिंडुमूपानि शूलाः। निलादक
वियः ॐ विकलाय। निलादकस्वधाः। साडुवियः ॐ कं
कनि२ भावनि२ भावनी२ भावनी२ प्रनिहन हयंकरिय
स्वधाः। पंचामृतः ॐ सामिलायसदधि सघृत समधूसरव
सु सर्वापकरण सहिनायस्वधाः। लंखवियः। पुन्य२ महा
पुन्यस्वधाः। सिद्धलसिद्धः। ॐ चंदनं चंदनादि दानपारमि
तापूजाभघ समुद्रफलनसमयस्वधाः। ॐ कामय। ॐ सर्व
विसर्वापायविशोधनि बुधालंकारयशूपवीनाय शील
पारमितापूजाभघ समुद्र फलनसमयस्वधाः। नगराजनि
मराजस्थाय। ॐ नगराजपुष्प नृगराजनत्थेवव। विचि
त्र पुष्पदानपारमिता पूजाभघ समुद्र फलन समयस्वधा
। धोवाजिस्थाय। ॐ दधिचक्र अन्नदानपारमितापूजाभघ
समुद्रफलनसमयस्वधाः। फलफल। ॐ लंगामधु ॐ फुला
नहालिवनिफलादय। कर्कनिवुमनावंग नमानिफलधा
षयन। धूप। ॐ धर्म्म२ धूपधानपारमिता पूजाभघ समु
द्र फलनसमयस्वधाः। मनवियः। ॐ दीप्ज्वालाब्ध ज्वाल२
ज्वालय२ दीपदान पारमितापूजाभघ समुद्र फलन समयस्व
धाः। मालनफलः। ॐ चाम्प२ शीलपारमिता पूजाभघ स
मुद्र फलनसमयस्वधाः। ज्ञानबलकयः। ॐ मुनि२ महामु

निसूरवावस्यामनुगच्छन्तुस्वधा॥ किंउानम॥ ॐ मृत्पानकुमहा
धावा मृत्पायां वेमवसीनदी॥ मृत्पायांमधुसंपृक्ता नवुद्धप
जमाम्यहम्॥ ॐ नीलया निर्यगानि च प्रमदवा सूनाय
य॥ उ॥ ॐ सू रुवकाद्यां नवुद्धं पूजमाम्यहं॥ संकल्प॥
ॐ यथा इमान संकल्पना सिद्धयस्तु॥ गाहावायकं॥
किंपूजायाय॥ ॥ धामसुलाथिय॥ किंउानम॥ ह्रासू
सिद्धानिकं॥ स्वांस्वाय॥ पालिस्वा॥ उस्वास्वा॥ धस्वा॥
समस्कस्वांस्वाय॥ ॐ पञ्चापनपुष्पंनम॥ स्वायस्वीयाय
स्वायधाविय॥ ॐ दधिक्षीरदायपायामिनापूजामध समु
द्रफलनसमयस्वधा॥ स्वं हा वा स्वाय॥ ॐ मत्स्यमांस
मुद्रज सर्वापदकाश सहिनायस्वधा॥ धस्वाय॥ ॐ मृत
मुमृतसकवस्वधा॥ लस्वाविय॥ ॐ पुण्यश्महापुण्यस्वधा॥
मुगावास्वाय॥ पिसुदानार्वनसंपूर्ण पुनवापि पिसुय
यमनस साहिन काजन संपूजयामि॥ स्वस्वा स्वाय॥
ॐ पुंगफल नाम्बुलादि संपूजयामि॥ किंउानम॥
ॐ नमाबुद्धाय वाठ॥ यस्यप्रसादवाठ॥ पंचबुद्धवाठि॥
नरकदावाठ॥ बुद्धसंवीजस्वंवाठ॥ ॐ नमस्कृत्वा ब्रह्मसि
हाय धर्मस्वरूपवक्रेद॥ ॐ बुद्धज्ञानसर्व लोकमयास
र्वदुर्गानि॥ ॐ नमस्कृ वज्राश्रीषाय धर्मचीनुस्वरूपवक्रे॥

सर्वसत्त्वहिताधार्य आत्मतत्त्वप्रदर्शकं ॥ २ ॥ ॐ नमस्तत्त्वा
श्रीषाय समन्तभद्र रावणे ॥ पंचानुद्ध स्थितं सर्व जूलिष
कप्रदायकं ॥ ३ ॥ ॐ नमस्त पद्माश्रीषाय स्वभावेप्रभावक
कं ॥ आश्वासपाकि सत्त्वेषु धर्ममृत प्रवर्षकं ॥ ४ ॥ ॐ नम
स्त विश्वश्रीषस्य भावकृत नमनुष्ठितं ॥ विश्वकर्मकरा अक्षयं
सत्त्वानां दुःखनाशकं ॥ ५ ॥ ॐ नमस्त पद्माश्रीषाय पंचा
नुद्धमकाषयत ॥ सर्वसत्त्वेषु सत्त्वेन्द्रा कारिष्यामि ॥ ६ ॥
ॐ नमस्त वज्राश्रीषाय चिन्तामणि वज्रधर ॥ दानन
सर्वसत्त्वानां सर्वाशा परिपूरयत ॥ ७ ॥ ॐ नमस्त गीताश्री
षाय कल्पापकल्पाश्छदकं ॥ चतुर्मार बलकरं सत्त्वानां
बाधिपाप्यत ॥ ८ ॥ ॐ नमस्त कृपाश्रीषाय ज्ञानपत्र
नुत्तमं ॥ पंचानुद्धज्ञान सर्वधर्मराजस्यपाप्यत ॥
॥ ९ ॥ ॐ लाजपुष्पमालानथागीतानृत्यादिव्यचतुष्टय ॥
धूपापुष्पावर्दीपावगाधाष्टवीनमस्कृत ॥ १० ॥ ॐ द्वारम
पास्थिमावेश्य अंकुश पाशस्फाटकं ॥ गुह्याय गावनिज्ञा
न द्वारपाय नमस्कृत ॥ ११ ॥ श्वदिक्षादो स्थिताथव चत्वा
र द्वारपाय नमस्कृत ॥ मूर्दिनादो दशास्थित्वा ॥ बाधिसत्त्वनमा
स्कृत ॥ १२ ॥ ॐ ब्रह्मशानूदवसार्द्ध लोकपालचतुर्दिशा
भूमियाकस वायुश्च सूर्याधिपनमस्कृत ॥ १३ ॥ ॐ नमस्त

प्रवाञ्जनसंकुस्कं मशुलागुलः ॥ १४ ॥ ॐ भिदुर्गा भिपविद्याधन
स्फाग्रसमाप्तः ॥ ॥ ॐ कृष्णानन्दु महाघोरं कृष्णाम्या वेमवशी
नदी ॥ कृष्णायामधुसं वृद्धा संवृद्धं पसमाम्यहम् ॥ ॐ दादश्या
म्यादिः ॥ दानपतियजमानस्य मातापितादेवान् दुर्गाभि
भावन सुखावानि पात्यर्थं भिपक्ष पिशुक्रियासपुर्णार्थ जुन
गन्धपुष्पधूप दीपनन्सर्व विधिपरिपूर्णं पसिद्धपरमभवा
यनमः ॥ ॥ गुरुपुजा दक्षिणा आशिर्वादः ॥ सिद्धानि
द्धः ॥ जिस्वाहाय ॥ ॐ सुगन्धजातिपुष्पनमः ॥ पानिविय ॥
ॐ क्रियिन्नाह्लापनिंवानवन्दा ॥ ॐ यावन्द सर्वसत्वावा जूशु
आवा जयायुआवा नृपिनावा संगिनावा जूसंगिनावा नेवस
गिनावा ॥ नामसगिनावा सर्वसुखावल्या मनुगाछन्दु स्वाहा ॥
कवलाभापुष्प स्वलनमया पुजायाथ ॥ थन पिशुगाशु
उथर्नव ॥ समाहुयवाम ॥ थन लूखवा आहखवा स्वादि
दिय ॥ वाक्य ॥ ॐ कुलाद पजन्यर्य फलादिवगाछनु
फलाद विनासाय शागवासंव गाछनु ॥ पिशुगाथय
जउा अनागु जउासनय षउा अनागु खउासनय दधि
चागु दुधुसनय ॥ स्वपुस्कालिनझला ॥ कुलकुल खाव
जि खां दक्षा स्वन्नसिनय पुजायाथ ॥ सिद्धानिद्धः ॥
वस्तुस्थाय ॥ स्वाहाय ॥ स्फागयाय ॥ ॐ नमस्कृतामन्दासं

हाय · धर्म्मचक्र · प्रवर्त्तिन ॥ नमो बुद्ध · आदेशामि · आधयं
सर्व दुर्गतिं ॥ ॥ संकल्प ॥ ॐ यथा दीमान संकल्पवासि
द्धिवसु · ॥ ॥ गुरुमशुलदनागु ॥ विसर्जनयाय ॥
कुशनथन ॥ ॐ धर्म्मधातुवागीश्वराय · कुशासन उथर्कव ·
ॐ पंचतामागाय कुशासन उथर्कव ॥ ॐ वैरुचानवाय कु
शासन उथर्कव ॥ ॐ वृद्धपिनामह · यथानाथ पिंडुय ·
उथर्कव ॥ ॐ पिनामह · यथानाथ पिंडुगागाय · कुश
सन उथर्कव ॥ ॐ पिनामह · यथानाथ · पिंडुगागाय उथ
र्कव ॥ लम्बाषुद्ध यथयाय ॥ लम्बासमिषुद्धनस्य ॥ थवा
पिनायगु ॥ स्वापिना दिउगान · यथानाथ · पिंडुगागाय ·
कुशासन उथर्कव ॥ ॐ विद्धलायजुधागामन ॥ पिंडुग
यक्ष ॥ रिउगाय ॥ सा सखिंवथिय ॥ ॐ कुगावाक्षि ·
हामलंहावाक्षि ॥ वाक्ष ॥ ॐ आनिपलपमानन · पिंडुद
यागायासथ ॥ वृद्धम · सप्दगालाशि · कुलभद्रा नकशन ॥
॥ धुपनथ ॥ ॐ यन्त्र २ महायन्त्र · यन्त्रकिवल्ल · कुगानिमार्ग ·
विनासाय · सुगानिमार्ग · कर्थयन ॥ दीप ॥ ॐ यन्त्र २ महा
यन्त्र · यन्त्रकिवल्ल · कुगानिमार्ग · विनासाय सुगानिमार्ग ·
कर्थयन दीपनम ॥ लंखधावाथय ॥ पिन ॥ ॐ वदिक्षा
यावहिसुमो स्थापयन · पिंडुगाजन ॥ जलधावामृतीगा ·

ॐ सगच्छि सवसंस्वन्॥ दक्षिणीकृत्य पश्चमामि पश्चिमा
भिमुख॥ साचाकल॥ चाकल। पिनकापूर्व॥ श्रीसूर्य्यरूप
यक्ष॥ दक्षिण नगाल। पिशुचूयक्ष॥ विकल। पिशुशुद्ध
खुसियासिथनय॥ पिशुखुसिचूयक्ष॥ ॐ। पिशुकि
यासमाप्त॥ ॥

ॐ सर्वधर्म दलग गायत्री

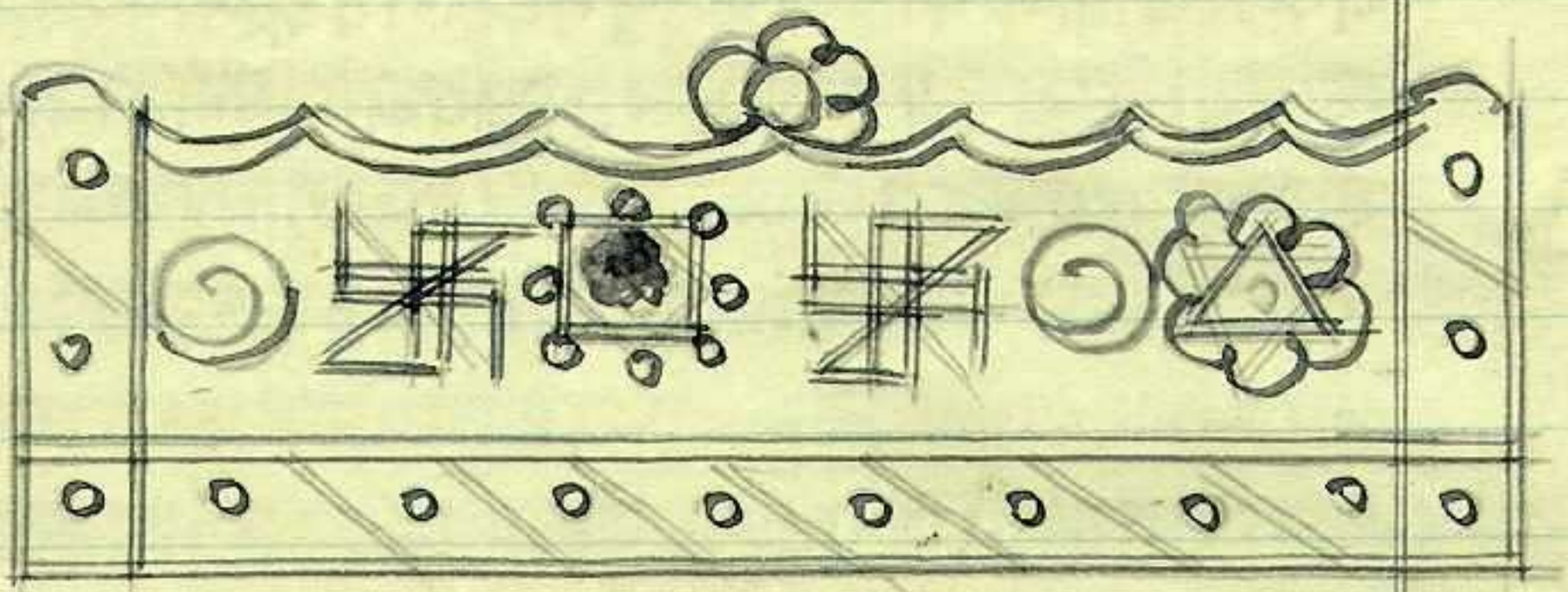

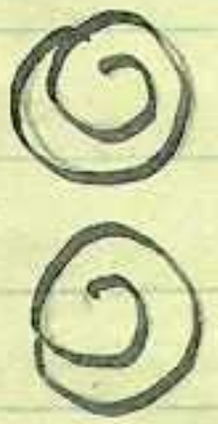

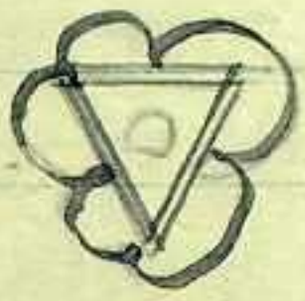

थनमचावुव्यनक्ष्मगु॥ ॥यथाविधिर्थाधापत्रायाय॥ ॥
ह्नापां॥ सूर्यार्घ्यायाय॥ पंचगव्यप्राशनयाय॥ निवचस्वरूपं
स्वभावपूजायाय॥ ॥गुरुमंडलदेव॥ बृहस्पतिदेव॥
निसमाधिदेव॥ निलाञ्जनयाय॥ मनरुमालवानाय॥ ॥
ॐ हृदयमावाहनं पुष्पावा हनुमषां मथागान॥ हवंशीषांव
र्या निर्याव हवंवा टमहाशवमन्त्र॥ कलशपूजायाय॥
स्वा आपिपूजायाय॥ धूपदेव॥ भगवन्त्रीमनशीशी
वाशुशी हवी आवाहनाय ॐ हवंजधूपनिर्यादया मिनमा
नम॥ आय॥ ॐ हहा ह्रीं अमृतधूपनिकुस्वाहा॥ लाकुकुनय
ॐ नमावाशुशी हवी अमृतधूपस्वाहा॥ गन्धपुष्पायाय॥
ॐ आ कुं हहा ह्रीं हकाव हनमवर्शु शकावगन्धनाशरी॥ ह्रीं
काव वीजहनाव अमृतानाकायन्दुनावयम्॥ आकर्षण पादा
र्घ पूजा॥ ॥ स्वानवाय॥ ॐ शीहथपीथायस्वाहा॥ ॐ आ
गन्ध पीथायस्वाहा॥ ॐ आहीयानपीथायस्वाहा॥ ॐ नीर्म्मान
चक्रायस्वाहा॥ ॐ सकलगावक्रायस्वाहा॥ ॐ महासुखचक्राय
स्वाहा॥ ॐ वजपुष्पनिकुस्वाहा॥ पञ्चोपचारपूजायास्या
सुमि॥ ॥ॐ नीलनीलाञ्जनी वाला अमृतास्यसंगासंगेनी
लक्ष्मीहवा महवाम्ब अमृतालवमामकी॥ स्मथक्राय॥
थ स्वां ला क्राय॥ मन॥ नायहाल॥ थागाम्बयस्वरूपं

कुलपूजायाय॥ धूपकर्म॥ ॐ भगवन्श्रीमन्श्रीआगा
म्बवाय आवाहनाय हूं दवज धूपं निर्यातयामि नमोनमः
॥ जाप॥ ॐ ह्रीं श्रीआगाम्बवाय हूं फट् स्वाहा॥ मूलमंत्र
पादार्घ पूजा॥ स्वानवाय॥ ॐ ह्रीं श्रीआगाम्बवायस्वाहा॥
ॐ मूलानदाक्षिणीयस्वाहा॥ ॐ बालादाक्षिणीयस्वाहा॥
ॐ वज्रपुष्पपिष्टस्वाहा॥ पञ्चोपचारपूजायास्थाकुलिग
ॐ आगाम्बवज्राम नाथशाखिनी आलनायकं॥ आगाम्बव
सदाशिव आगाम्बनमोनमः॥ स्मयस्कार्य॥ श्र खा ला
मन नायहाल॥ मवावलिपियाहय॥ पञ्चगव्यविय॥
गुगुमशुलदय॥ मनक नालवामाय॥ सर्वधोपनिक्षाक
या॥ सगविय॥ नपलि चाकल दक्षिणानयालउाक्षाय
मूंगुह्याक्षं॥ नामस्कुय॥ ॐ अमृतनामस्कुलस्व॥ वज्राधिय
स्वस्कार्य॥ स्वस्किवाम्बवाय॥ सिसापालूस्कार्य॥ मचाया
नपंचामृतनक्षं॥ ॐ मधुवृत्तपासमस्वाहा॥ विसर्जनयाना
कलंवाक्षस्कार्य॥ वाक्षपूजायाय॥ बहस्पदनक्षं॥ क्षिउा
ननक्षं॥ गुरुपूजायाय॥ दक्षिणास्कार्य॥ गुरुगुरुयान
विय॥ आजिमायानविय॥ आक्षलिनकुवानविय॥
सिसापालू आगवास्कार्य॥ पंचाकुशस्कार्य॥ सना
कुवाना विसर्जनयाय॥ सगर्धोपानि क्षाकाय सगम

भ॰ ॥ सिद्धाभिक्षु ॥ कलशाभिषेकाविषा ॥ कुलवादक्षाय॰
आगवा॰ ॥ शालसीह लाखांघाय॰ ॥ पंचाकुशकाय ॥ स्मयक्षा
थ ॥ खां आकाय ॥ आमिलूय ॥ शाकनयाय॰ इतिमंत्र॰
प्रासनसमाप्त ॥ ॥

মা ক্ষ স কলশা গা সি আজিন সিক্ষ

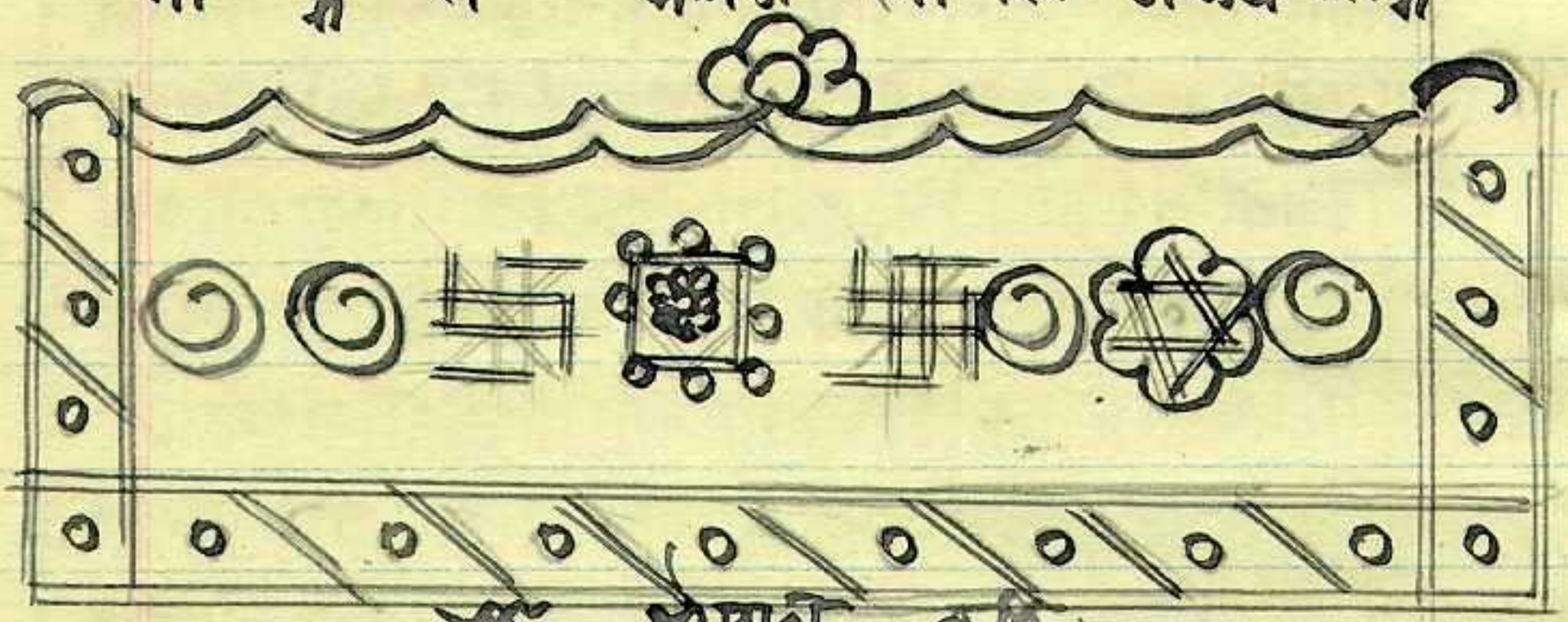

थनजंकुयाय॥ ॥ यथाविधिश्चथापनायाय॥ ॥
क्षापांसूर्य्यार्घ्यायाय॥ ॥ मिनत्व स्वरूपंस्वभावपूजायाय
गुरुमंगुलदेव॥ मिसमाधिदेव॥ ॥ निलाजनयाय॥
मनरु मालवामाय॥ ॥ कलशपूजायाय॥ स्वाथापि
पूजा॥ ॥ धूप॥ ॐ आगच्छपरमदेव स्वस्थाथपरम
ऽधवी॥ अहं पूजाकरिस्यामि सदाभा सन्मुखानव॥ भग
वन् श्रीमनुशाशी वालुशीदेवी आवाहनाय ॐ देवजधूपं निर्या
तयामिनमामम॥ ॥ आप॥ ॐ हृहाद्रीं अमृतपानिक
स्वाहा॥ लाक्षकुमय॥ ॐ नमावालुशीदेवीअमृतद्रीं स्वाहा
गरुडमुद्रायाय॥ ॐ आ: हृहाद्रीं हृदाव हृगवर्ष्ण शाकाव
गन्धनाशनी॥ द्रीकारवीजहृदाव अमृताकारकुलावथम॥
आकर्षण पादार्घ पूजा॥ स्वानवाथ॥ ॐ हथपीथायस्वा
हा॥ ॐ आगच्छपीथायस्वाहा॥ ॐ आ। दियानपीथायस्वाहा॥
ॐ नीर्माणवकायस्वाहा॥ ॐ संगमावकायस्वाहा॥ ॐ महापू
खवकायस्वाहा॥ ॐ वजपुष्पंपनिस्कुरवाहा॥ पञ्चपवावपू
जावास्पस्तुनि॥ ॐ नीलनीलाजनी लाजनी लाजाजुकाय संगासंगि
नी॥ हृक्काहंवा महवाक्क अमृकालवमामक्की॥ स्मयक्काय
थ ला खा क्काय॥ मनावेय॥ नायकाल॥ क्रामाचीपू
जायाथ॥ धूप॥ भगवन् श्रीमनशीशी वालक्कामाची

आवाहनाय ॐ दंवजधूपनिर्यान्दया मिनमानम॥ आप॥
आचमनीय पादार्घ पूजा॥ स्नानवाय॥ ॐ हूं फट् ज्वाल
कामालीयस्वाहा॥ ॐ चक्रवर्त्तीयस्वाहा॥ ॐ मयूरवाहना
यस्वाहा॥ ॐ वंजपुष्पंपानिछस्वाहा॥ ॐ महालक्ष्मीय
स्वाहा॥ ॐ चक्रभावनीयस्वाहा॥ ॐ सिंहवाहनायस्वाहा
ॐ वंजपुष्पंपानिछस्वाहा॥ ॐ गंधपानिस्वाहा॥ ॐ महाका
लायस्वाहा॥ ॐ वंजपुष्पंपानिछस्वाहा॥ ॥ पञ्चोपचा
रपूजा नास्यास्तुति॥ ॥ ॐ कामालीचक्रवर्त्तीचक्रा
बीजसंभवा॥ स्वायंभाविरुपाचैव नमस्तु मयूरवाहनी
ॐ महालक्ष्मी सिंहासनाय ब्रह्मायशीगर्भसंभवा॥
कोमाशुर विनाशाय महालक्ष्मी नमस्तुते॥ ॐ अष्ट
कुलस्थितादेवी अष्टवृक्षनिवासिनी॥ अष्टरूपवसंयु
क अष्टमातृकानमस्तुते॥ स्मयन्छाय॥ श्व स्वा॰ पा॰
छाय॥ मनविय॥ गायहाल॥ अ॰ अ॰ पूजायाय
आगाम्बवस्वरूप॥ ॥ धूप॥ कमलवर्त्तीमूर्त्ती
श्रीआगाम्बव आवाहनाय ॐ दंवजधूपनिर्यान्दया
मिनमानम॥ आप॥ ॐ ह्रीं आगाम्बवायहूं फट्
स्वाहा॥ आचमनीय पादार्घ पूजा स्नानवाय॥
ॐ ह्रीं आगाम्बवायस्वाहा॥ ॐ अष्टकान दाकिनीयस्वा

हा ॥ ॐ वनालदाकिनीयस्वाहा ॥ ॐ वैजपुष्पंपामिछ
स्वाहा ॥ पञ्चोपचारपूजामासास्यामि ॥ ॐ आगाम्वरज
गननाथं आगिनीज्वालनायकं ॥ आगाम्वनसदावीरं आ
गाम्वनमसुरं ॥ समयस्थाय ॥ श्र. स्वां. गा. स्थाय. मन
विय ॥ मायहाल ॥ थनमवावालिंपियाहय ॥ ॥ गुरु
मशुलदनक्ष ॥ विसर्जनयाय ॥ निलांजन. ॥ मनकुनाल
वानाय ॥ ॥ सगाविय ॥ स्वस्तिवाक्षवान ॥ नयालि
नयावसु लउाह्नाय ॥ ॥ संकुक्षास्वां क्षारवायक्ष ॥
वस्तुपूनक्ष ॥ निसाक्षायक्ष ॥ ६मास पूजा. वा. मिजगु
सा सकू ॥ मिसाहुसा क्षाक्षानय ॥ थाक्षालिनक्षानाउा
मचायान २क्षाल्वय ॥ मचायानक्षायक्ष ॥ वुक्षमियान
हस्तपूजायाय ॥ निसामिक्ष. ॥ थायवाक्षवायक्ष ॥
नसलाविय ॥ थाक्षाय ॥ धूनक्षाउा ॥ पंचामृतनक्ष ॥ स्वय
मु. नक्षामु. ॥ नक्ष ॥ वाक्ष ॥ ज्ञानक्ष ॥ सिक्षापनि ॥ ॐ
प्रथमप्राणायस्वाहा ॥ अंगुपनि ॥ ॐ द्वितियवानायस्वाहा
थालापनि ॥ ॐ समानायस्वाहा ॥ दथुपनि ॥ ॐ चतुर्थदा
नायस्वाहा ॥ क्षालापनि ॥ ॐ पंचव्यानायस्वाहा ॥ ॥
सकनानया. स्वक्षानप्यकनक्ष ॥ ॐ बुद्धपाल. धर्मपाल.
संघपालायस्वाहा ॥ क्षासकनानया. स्वो सिसाहुलनय ॥

मुद्रासिद्धिनमः॥ कलपूजायानमः॥ चक्रपूजा-
यानमः॥ बलिविधिः॥ महास्पदनमः॥ विसर्जनमः॥ वि
सर्जनयानमः॥ गुरुपूजायानमः॥ दक्षिणाकाय॥ गुरु
ध्यानविधिः॥ सगणोपनिमाहनी॥ सिद्धकाकाय॥
सगणनमः॥ सिद्धनिद्धः॥ कलशाभिषेकविधिः॥
कामारीकाय॥ सिद्धमाहनी॥ पवसूत्रकामयाकाय॥
सकलामयाकामारीकाय॥ मूलमंत्रविसर्जनयानमः
य॥ पंचामृतकाय॥ स्वा॥ काय॥ स्नपनकाय॥ धून
काउ॥ अंकुपिनयनः॥ देवताजपकः॥ धूनकाउ॥
शाजनयाय॥ धूलिअंकुयाय॥ कुल॥ ॐ॥ फलान्न॥
पासनक्रियासंपूर्णः॥ ॥ ॥ ॥

ओमचा

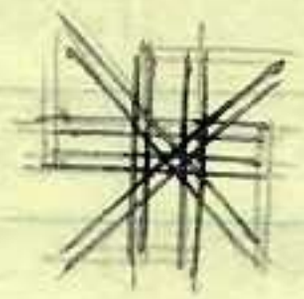

कलश

कलश

ज्वाला 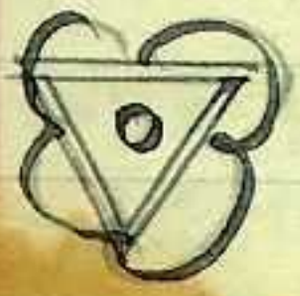

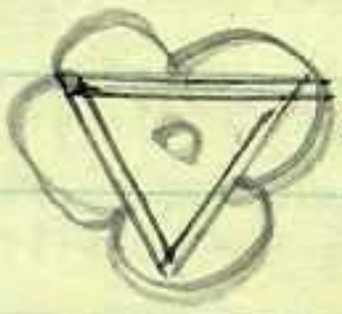 ज्वाला

धाकालीनकु
गर्नाउ.

थनहाकगुविधि॥ ॥ झापा॥ नसलाविय॥
वलिंपिय॥ ॥ ॐआः खशुवाहुं विघ्नान्दकृन्॥
पुंसव विघ्नहर२ हुं फट् स्वाहा॥ चलपानिजा॥ ॐआः
खशुवाहुं सर्वविघ्न झंझापदकाभिकुरु हुं फट् स्वा
हा॥ पुष्पकारंपादकस्य॥ ॐआः खशुवाहुं सर्वविघ्न
मलानय२ हुं फट् स्वाहा॥ शुक्रशावद॥ ॐआः खशु
वाहुं सर्वपाप विघ्नमालाराशिंकुरु हुं फट् स्वाहा॥
सर्षप॥ ॐआः खशुवाहुं सर्वविघ्न झलनाशाय२ हुं
फट् स्वाहा॥ ॐखलंख॥ पुष्टासर्वार्थसिद्धि विमनसु
मनसु मंगलवाविसल्ल॥ ॥ मन फ मालवाभा
थ॥ हंधम्मावाहुपकावा हुंगुपा नथागन॥ हुंवदफ
षा वर्षानिपाव हुंवादि महाशुक्लांस॥ थुलिधुन
कादलशा। हिंधकाविय॥ थाकालिनकुन गाचाश
ना लंखधाया हायका हुंगुनहया॥ हिंगु। दिशास्वक
थन कलाशानापंनथ॥ ॥ झापानसलाविय॥
खवशुगानथ॥ थनपुरुषयाना विय॥ गुरुगु थाकाली
नकु झाहानयान॥ सकासिंविय॥ थुलिखव
विधुस्थलि॥ कन्याहानविय॥ पुरुषयाशिवनाथ
कन्यायागुशिवनापंनथ॥ कलशा दथुसनथ॥

थालगुरुमिजयागु क्वाद्दः मय । मिसायागुक्वाँगल
मयः दक्षिणा भाह्र ।४ मयाव कलशलेखहायाय
महादानवाच्छः दानपति जजमानस्य यथानाम रथ
यस्यम्यादिः सहविवाहिमाः गाथाः ॐ सर्वनाथा
गनामुदा कुलनलाक प्रकाक्षी ॥ गृहीत्वापाशिसापा
सि वृद्धकृत्यपाक्षिमिमाः सूर्यमुमुक्षदिन कयादान
संपदयः ॥ ॥थनमुलिष्यक्षविय ॥थनसहलजन
याक्षः ॥ थालठ्ठक्ष्याक्षः ॥ लेखविय ॥ चवाक्षः ॥ दवस्था
यः ॥ मंङ्गलास्कागवाठ ॥ कलश्चाय ॥ धूलिशाक्षगुविधि
कुलाः ॥ ॥ ॥

ভা. ক্ষ. স. ক্ষ. গা. বি. সিদ্ধ.

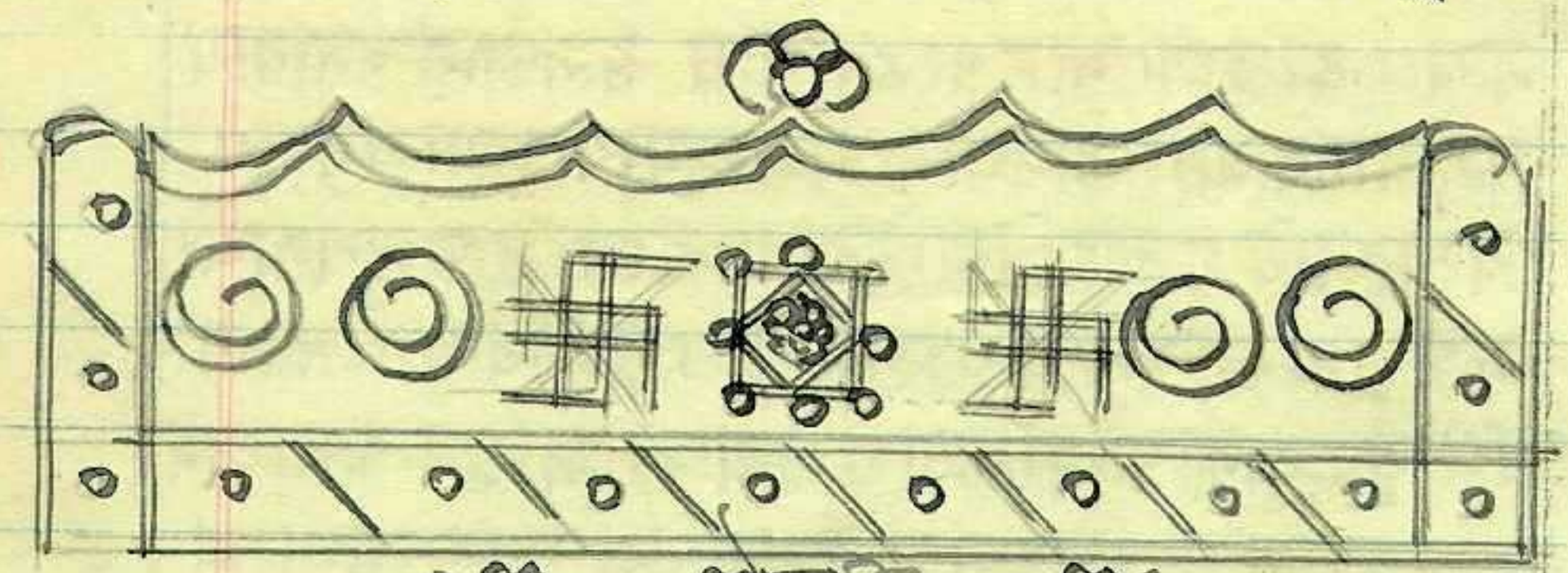

থক্কি. দামামী ক্কক্কি

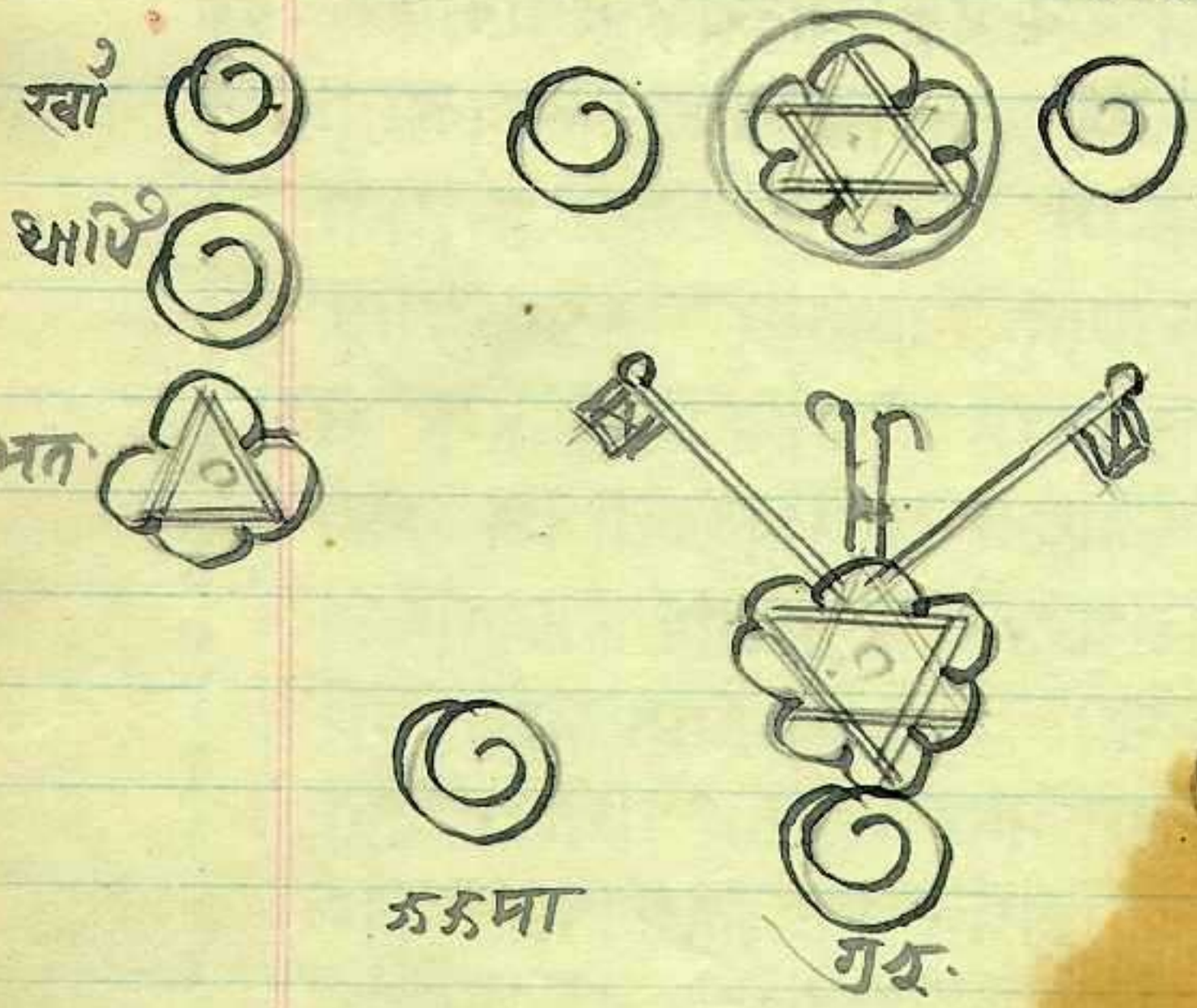

थनसप्याब्दविधिः ॥ ॥ आपां ॥ सूर्य्यार्घ्यायाय ॥
गुरुमण्डलदत्त ॥ कांस्यपूजायाय ॥ बृहस्पतदत्तश्च ॥
निसमाधिदत्त ॥ निलांजनयाय ॥ कलशपूजायाय ॥
वायुशीपूजायाय ॥ धूप ॥ रुगावनृगामनशीशीवायुशी-
दवीआवाहनाय ॥ दंवजधूपानियोजयामि ॥ आप ॥
ॐ हहाहीं अंखंपानिकस्वाहा ॥ गरुडमुद्रायाय ॥ ॐ आ
ह ॥ आदर्श पादार्घ पूजा ॥ स्वानवाय ॥ ॐ हथ
पीथायस्वाहा ॥ ॐ आहीयानपीथायस्वाहा ॥ ॐ आलंध
नपीथायस्वाहा ॥ ॐ पुरुंगिनिपीथायस्वाहा ॥ ॐ निर्म्मा
लचक्रायस्वाहा ॥ ॐ धर्म्मचक्रायस्वाहा ॥ ॐ सकलाचक्रा
यस्वाहा ॥ ॐ महासुखचक्रायस्वाहा ॥ ॐ वजपुष्पंपानि
कस्वाहा ॥ पञ्चोपचारपूजाभास्यामि ॥ नीलनीला
जनीलाकाञ्चनाभ-संगसंगिनी ॥ रक्ताहवानमस्यामि ॥
अरुणारुवमामाकि ॥ स्मयस्थाय ॥ श्व. स्वां. वाक्थाय ॥
मनविथ. मांयहाल ॥ कामारीपूजा ॥ धूप ॥ रुगावनृ-
गामनशीशीवालकामारी. सिंघिनी. व्याघ्रिनी. आवाहना
यदंवजधूपानियोजयामि ॥ आप ॥ आदर्श. पादा
र्घ. पूजा ॥ स्वानवाय ॥ ॐ रुरुवालकामारीस्वाहा ॥
ॐ चरुवर्ण्यायस्वाहा ॥ ॐ मयूराजनीस्वाहा ॥ ॐ वजपुष्प

प्रोक्षिस्वाहा ॥ ॐ महालक्ष्मीनमस्वाहा ॥ ॐ चक्रकपालीनम
स्वाहा ॥ ॐ सिंहवाहनीनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्पंप्रोक्षिस्वा
हा ॥ ॐ महाकालायनमस्वाहा ॥ ॐ पाशपाणिनमस्वाहा ॥
ॐ वज्रपुष्पंप्रोक्षिस्वाहा ॥ पञ्चोपचारपूजाचास्यास्तुमे
ॐ क्रीमायीचक्रवर्तुलाचक्राय बीजसंज्ञवा ॥ स्वायुधाविदु
पाशंचनमस्कृ मयूरवाहनी ॥ ॥ महालक्ष्मीचक्रवर्तु
लाचक्रायबीजसंज्ञवा ॥ स्वायुधाविदुपाशंच नमस्कृ सिंह
वाहनी ॥ जूष्टकुलस्त्रिमादेवी जूष्टवृक्षनिवासिनी ॥ जूष्ट
कृत्व संयुक्तं जूष्टमातृका नमस्तुते ॥ स्मयस्थाय ॥ थ
स्वा वाक्स्थाय ॥ मनविथ ॥ मांहाल ॥ ॥ सप्तमचा
मयक्रुपिन ॥ गुरुमशुलदलक ॥ विसर्जनयाय ॥ निला
जन ॥ मनक नालवालाय ॥ धूलिधूनकाय ॥ कलजुग
नय ॥ गुणाकु थाकलीपिंनवीय ॥ चिकंकलनवुयक
थकुलीनकनक ॥ आदाकशुद्ध कर्तृदेवीस्वरूप स्वा
नपाणिस्वाहा ॥ कादिवाकनक ॥ इंनियकशुद्धर्थ
कांजिस्पर्शनपाणिस्वाहा ॥ सिंहुस्थाय ॥ गृहीयकश
वंधनार्थ पंचवृक्षस्वरूपस वहस्यमु ॥ कसकंकन ॥ प्रति
विम्बुसमाधर्मा आख्याशुद्धा हंविवा ॥ जूनाय
जूनकपाव हंकुकर्म समुद्भव ॥ कुमारीसुरक्षा हनकंठा

नु॥ पंचबुद्धस्वरूपनकुमारीमुखं पानिष्ठस्वाहा॥ ॥
पंचबुद्धस्वरूपं पूजायाय॥ धूप॥ कवकनृशीमनृशीशी
पंचबुद्ध नथागत आवाहनाय ॐ हंवजवृपानियोदया
मि॥ ॥ आदर्श पाद्यार्घ पूजा॥ स्नानवाय॥
ॐ आर्यवलोकितेश्वरायस्वाहा॥ ॐ आर्यमैत्रेयायस्वाहा॥ ॐ आर्यमि
तायस्वाहा॥ ॐ आर्यमाघासिद्धस्वाहा॥ ॐ पाद्यवरायस्वाहा॥
ॐ मामकीस्वाहा॥ ॐ पाशुपायस्वाहा॥ ॐ आर्यतारायस्वा
हा॥ ॐ वज्रपुष्पपानिष्ठस्वाहा॥ ॥ पंचोपचारपूजा
गास्यामि॥ ॐ नमस्ते पंचबुद्धाय आर्यावलोकितेश्वर कुलनाथ
मध्यवलोकितनाथ पंचबुद्धनमस्तुते॥ ॥ सिद्धकाय॥
ॐ यामानमवकला निर्मुक्ता विमुक्तमालास्वरा दुर्धाभि
हृतयाकेलाब्ध आहिता पियुषधारापूजा॥ बुद्धाबुद्धा
नयसाविया विकदुषा सामरु सिद्धाहुवा सावालाव विया
किनाविवाहिता जीवजवाहो आपानुव॥ ॥ सगान
गाय॥ सिरलूय॥ मधिकासिलउल्लाय॥ कुस्या मुस्या
आगनय॥ कसिहालरवन॥ आगनयक॥ ॥ देव१
गुगाजु१ धाकालि धाकालीनकी२ समीलुकष्ठी १
धुलिसिन कुस्या वाजि मधि विय॥ धुनकालि॥ वाक
पूजा॥ किउानकक॥ गुरुपूजा दाक्षिण विसर्जन॥

।सिद्धसिद्धं ॥ सिद्धामुक्तकाय निर्द्धं ॥ नमुमवामयछुपिंन
द्धसकं सिद्धामु जनकाउं जप्यकंछाय ॥ सकलांनयाकोमा
रीछाय ॥ ॥ स्मयकाय खां काय ॥ सहलाउन
यकि ॥ ॥ थूलिंगाप्यकिगुविधिंगुरम् ॥ ॥

ऊ स. क. ।गा ।सि.

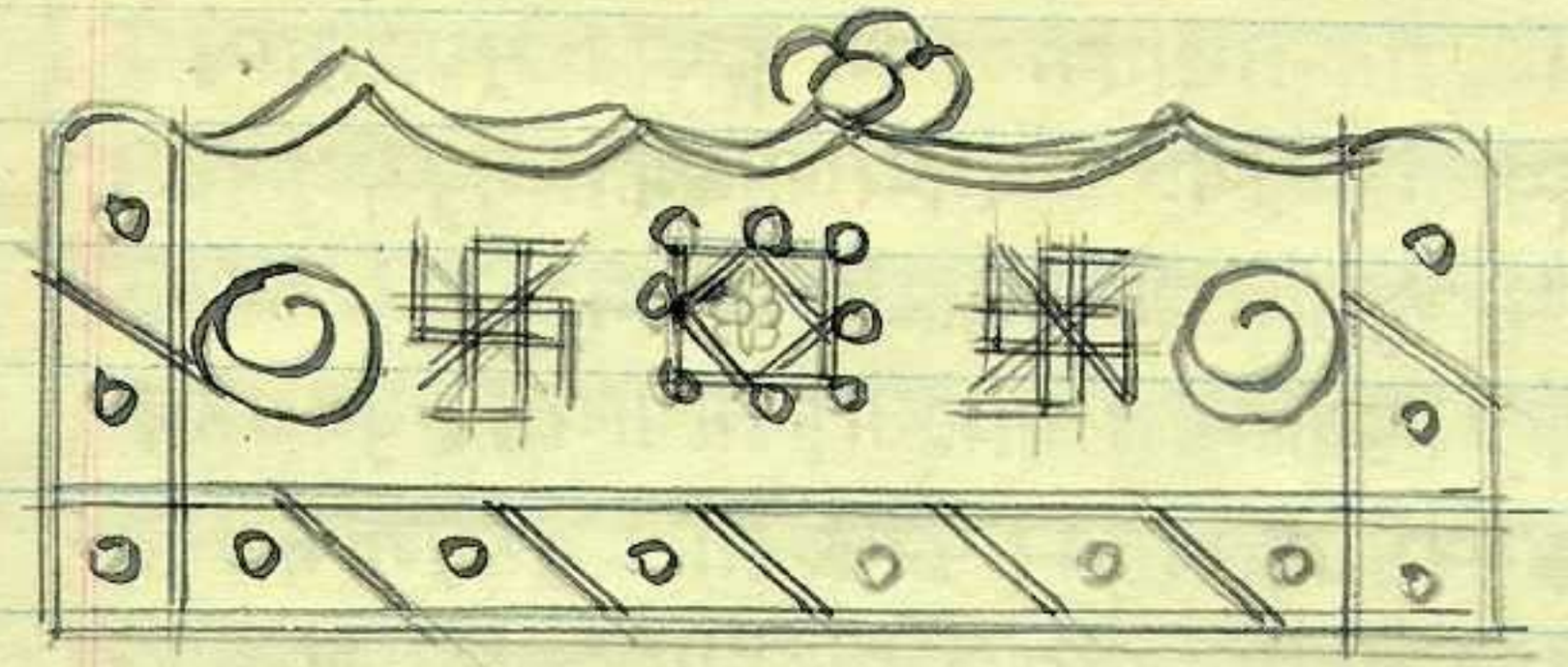

खां

थाणि

मग

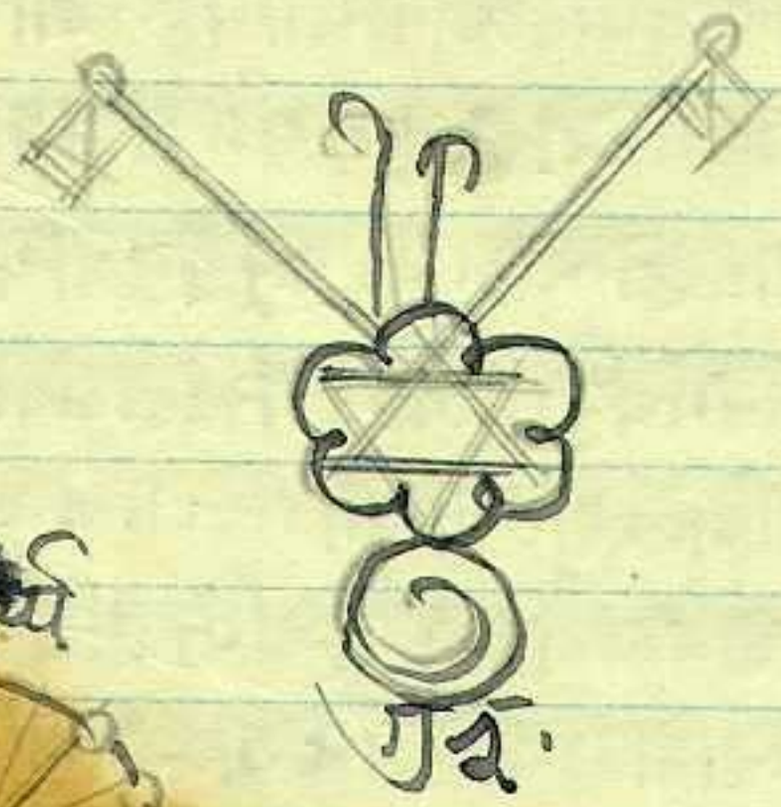

सूर्य

गर्द

पाङ्गनयाङ्क

धनवाञ्छाधनकंगुरु ॥ ॥ यथाविधिध्यंथापनायाय ॥
कलश सर्वं धो ॥ जाप्ताम ॥ सर्वं । सिद्धाम्बु २ खा
थापि मन ॥ थापनायाय ॥ ॥ पा ॥ सूर्यार्घ्यायाय ॥
गुरुपादार्घ्यकाय ॥ पंचगव्यआवन ॥ गुरुमंगुलदन ॥
॥ सिद्धपुजा ॥ वहस्पकाय ॥ सिद्धमाधिष्ठ ॥ कलश
पुजा ॥ सिलांजन ॥ वारुणीपुजायाय ॥ धूप ॥ उं
गंगपरमदेव स्वस्थान परमकवी ॥ ॥ ॥ हपुजाकवी स्वामि
सदाभा सनमुखाभव ॥ भगवन् श्रीमनशोगी वारुणीदेवी
आवाहनाय ॥ देवजधूपानिर्वामयामि ॥ आप ॥ उं हहा
क्रीं अमृतं क्रीं अमृतं स्वाहा ॥ लाक्ष कुंकुम ॥ उं नमो वारुणीदे
वी अमृत क्रीं अमृतं स्वाहा ॥ गंधुतमुद्रायाय ॥ उं आ
कं हहा क्रीं हकार हनमवसु हाकारगन्धवाहायी ॥ क्रीं कार
वीजहकार अमृतामार्गकुलावथम ॥ ॥ आकर्षण
पार्घ्य पुजा ॥ स्वानवाय ॥ उं हथपीथायस्वाहा ॥
उं आगवपीथायस्वाहा ॥ उं उ। दियानपीथायस्वाहा ॥
उं नीमानवकायस्वाहा ॥ उं सकागवकायस्वाहा ॥ उं म
हासुरववकायस्वाहा ॥ उं कजपुष्पं निक्षुस्वाहा ॥ ॥
पंचोपचारपुजा वारुणीक्षाम ॥ ॥ उं नीलनीलांजनी
लाला अमृताम संगसंगिनी ॥ रक्षाहवामहवाक्ष ॥

मूलमंत्रमामंत्र्य॥ ॥ अथ सूर्य्यमंडलपूजायाम्॥
॥ धूप॥ रुगावनुश्रीमनुश्रीसूर्य्यदेवआवाहयामि॥
देवजधूपनिर्य्यान्दयामि॥ आचमनीय. पादार्घ. पूजा॥
॥ स्नानवाय॥ ॐ भानुकालायस्वाहा॥ ॐ श्रीमांशवेस्वाहा॥
ॐ चक्रांकुमायायस्वाहा॥ ॐ वुद्धायस्वाहा॥ ॐ कागापवाय
स्वाहा॥ ॐ अंशुमांकुमायस्वाहा॥ ॐ कृष्णावर्ण्यस्वाहा॥
ॐ चाक्षुवस्वाहा॥ ॐ कंगवस्वाहा॥ ॐ वज्रपुष्पप्रतिकृस्वा
हा॥ पवापवापुष्पावास्यासुमि॥ ॐ जवाकुसुमसंकाशं
काश्यपयमहाद्युमि॥ नमोलिसर्वपापंकुमामि दिवाकरं
नवग्रहाय॥ मनविय॥ मायहाल॥ थनलिवाह्लामया.
म्ह॥ सुवानमस्वकहय॥ सूर्य्यवाम किसलीमयाउ. स्वाल
उल॥ स्वाकिवायायानय॥ पंचगाव्यविय॥ गुवूमंगुल.
दनक॥ निलांजन. मनरु. मालवागाय॥ सूर्य्यकावना
याय॥ किडामन॥ अर्घ्यवाक्ष॥ महादानवाक्षकाय॥
ॐ दुग्धाक्षमावशायुक. नववाद्यादि हामके॥ अंवहृपनि.
गृह्णतु. सूर्यदेव मयामूदा॥ रुगावनुश्रीमनुश्रीसूर्य्य.
देवना. रुद्रावकाय. ॐ देवकाकमलाय. सूर्यप्रतिकृस्वा
हा॥ अंवपूजायाय॥ थनस्वानस्वयवाय॥ स्वस्म १२
जाकिस्वान. दक्षिणा १२ स्वा. स्वय १२ नयावा. वाक्य.

ॐ मेषराशिस्वाहा ॥ ॐ वृषराशिस्वाहा ॥ ॐ मिथुनराशि
स्वाहा ॥ ॐ कर्कटराशिस्वाहा ॥ ॐ सिंहराशिस्वाहा ॥
ॐ कन्याराशिस्वाहा ॥ ॐ तुलाराशिस्वाहा ॥ ॐ वृश्चिक
राशिस्वाहा ॥ ॐ धनुराशिस्वाहा ॥ ॐ मकरराशिस्वाहा ॥
ॐ कुंभराशिस्वाहा ॥ ॐ मीनराशिस्वाहा ॥ ॐ वज्रपुष्प
प्रतिष्ठस्वाहा ॥ पञ्चोपचारपूजाद्रव्यास्तु ॥ ॥
॥ ध्यानं ॥ ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयमहाद्युतिं ॥ तमो
रिसर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ॥ नवग्रह ॥ मंत्र ॥ १२ स्वा
विग्रह ॥ मायहाग्रह ॥ ॥ धूलिधूनकाउ ॥ ॥ दिग्रामन ॥
गुगुपूजा ॥ दाक्षिण ॥ ६ १२ मूला ॥ ६ १२ धाकालियान
॥ विसर्जनयाग ॥ सिद्धनिक्क ॥ सिद्धामुक्कदाय ॥ सिद्ध
क्काय ॥ सियमु सिद्धनिक्क ॥ क्रसक्क सिद्धामुक्कदा
गल्लयाक्कक्काय ॥ पवाकुसुमकाय ॥ स्वांमाय ॥ ॥
क्रजनयाय ॥ नक्रस्वलाभावनसंपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥

77

নাদি স. দ. গো.

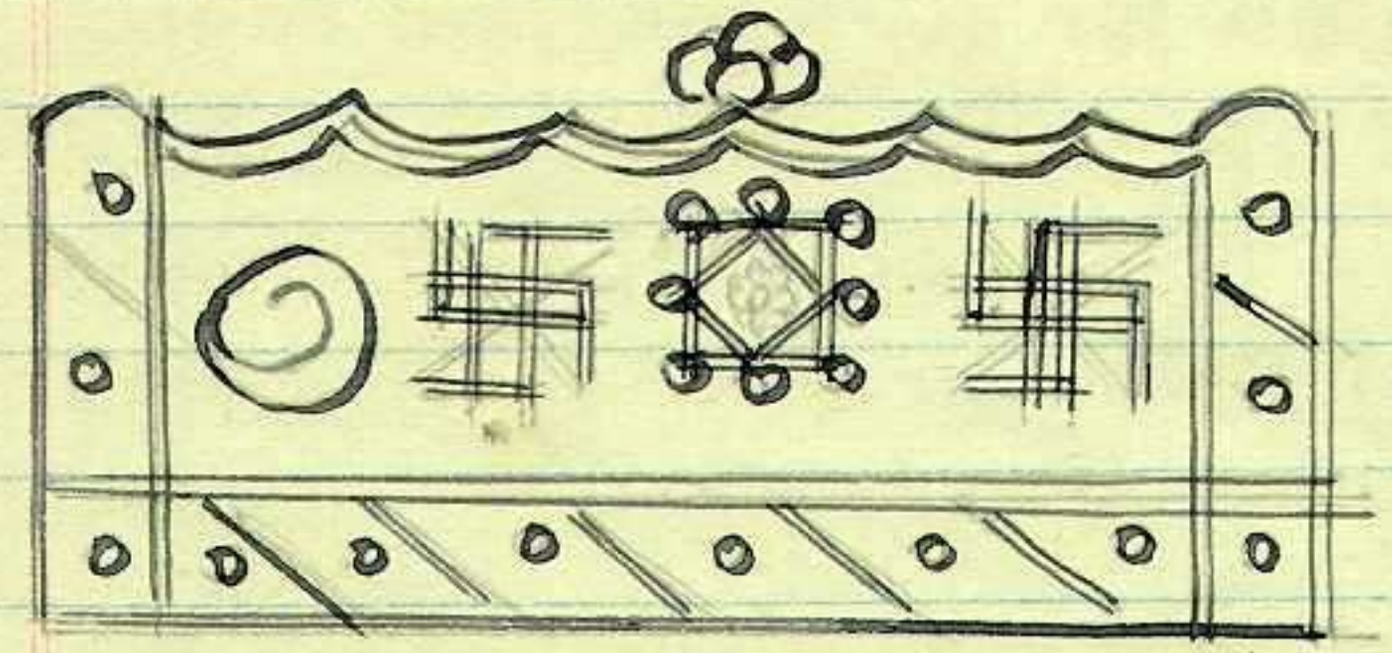

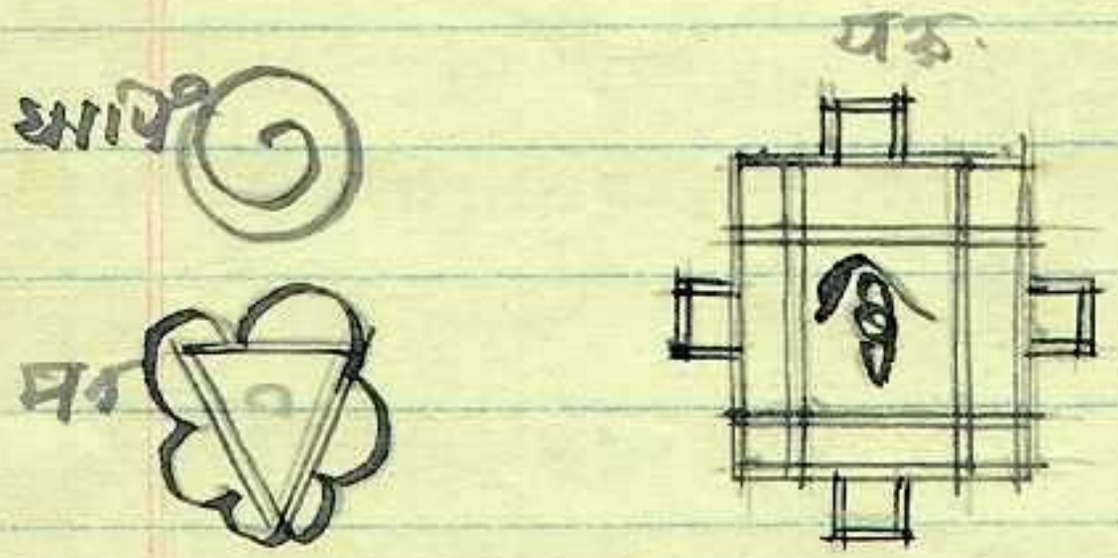

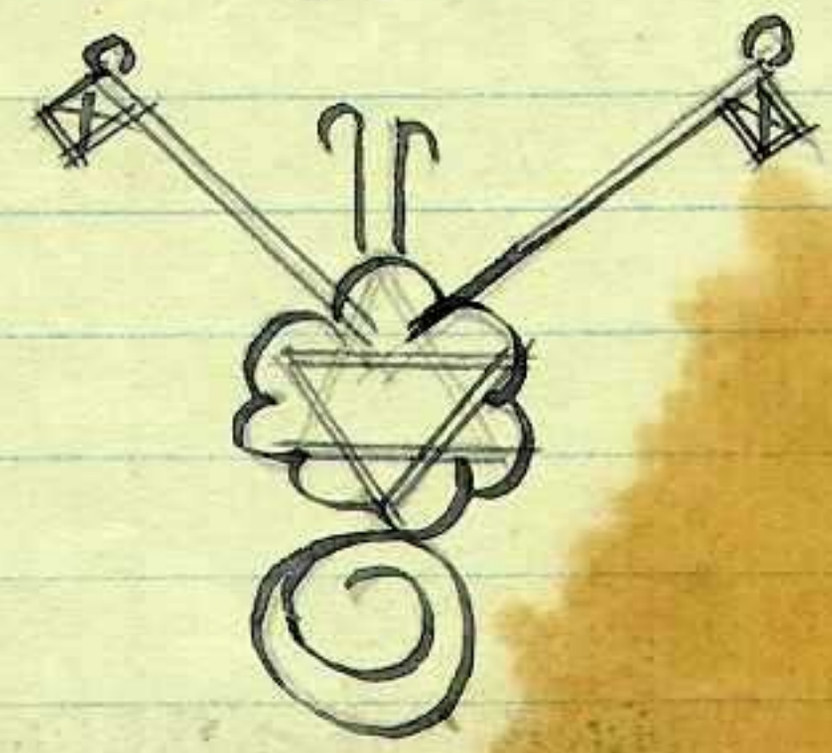

ॐनमाणीवजसन्नाय॥ ॥ ह्रापां कलशं सगारधो
गागास थापिं मम नकिं २ ॐ सिद्धिदसाम्भुमि थ्वालिस्थाप
नायाय॥ ॥ ह्रापांसूर्य्यार्घ्यायाय॥ गुरुपादार्घ्यदाय॥
गुरुमंगुलदय॥ नहस्यदाय॥ निसमाधिदय॥ कलशपु
जा॥ ॥ निलासन॥ थापिंपुजा॥ वाजुशिस्वरुपंपुजा
यक्ष्मुवमुयाय॥ नमाम्भुमिकुशाधिस्थान॥ गंखलखंहाया
य॥ वाक्ष॥ ॐखसुपाहुकुं॥ ॥ पंचवृहिनाय॥
ॐमदनीवजीरुववजवज्रं॥ वजगुलापाशंथिय॥ ॐवज
सत्वस्त्रा २ कुशासन॥ ॐ॒ॐमहाकुशा दिल्वापविताव क
ठवना वुद्ध धर्म संघलला पृथ्वीवीजाना दलगर्भा दानप
नि यजमानस्य सर्वविघ्नहर २ हुंफट्स्वाहा॥ थनयक्ष्या
कुनसन्दा दिल्लाकपालपुजा॥ ह्राप॥ ह्राकर्षण पुजा
॥ स्वानवाय॥ ॥ ॐ॒ॐइन्द्राय सुराधिपतये स्वाहा॥ ॐ
यमाय पुनाधिपतये स्वाहा॥ ॐ वरुणाय नागाधिपतये स्वाहा
ॐ कुवेलाय यक्षाधिपतये स्वाहा॥ ॐ ह्रीं सयनजाधिपतये
स्वाहा॥ ॐ नैऋत्य राक्षसाधिपतये स्वाहा॥ ॐ वायुव्यपव
नाधिपतये स्वाहा॥ ॐ ॐ॒ इन्द्राय सुनाधिपतये स्वाहा॥ ॐ वज्र
पुष्पंपानिक्षस्वाहा॥ पञ्चोपचारपुजा गारयासुमि॥ स्मय
थ खां वा क्षाय॥ मनावेय॥ ॐ धर्म्मावाग्रा दि॥ थनकार

आधन ॥ सिद्धाद्यानन्दः ॥ अंखलांखहायाय ॥ अंसंखेश्वा
दक्षपानिकुखाहा ॥ ॐ खंखुवाहुं ॥ पंचबुद्धस्वरूपंपूजा
दानपानिकाय ॥ सियमन ॥ ॐ बुद्धकुश्वा यान्कुसर्वमनु जि
नमुना दवना मस्तशा बुद्धया लोकपालास्वसुनदिव
सदा दवनाकिसमना आनन्दाकल्याण विकासकल्ज
नपामि मासयक्षानिनार्वे पूजामृदकुशाक्षि विजय नु
ज्ञाना हृदिज्ञानक्रियकु ॥ थनसिद्धाधानसहुंकापक्ष
मूपक ॥ ॐ विघ्नान्दकृत सर्वविघ्नहरहुंहुंस्वाहा ॥
दानपकम्याटे ॥ स्वस्तिवाक्यकाय ॥ शुकमस्तु स्वस्तिव
कुलांबुद्ध स्वस्तिदेवा समस्तृत स्वस्तिसर्वानि कुलानि
सर्वकाल दिसदुव बुद्धपूजा नुरावन दवनानामन
नवाध्यायार्थ समाहि ध्यन सर्वाध्याय समाधिन
स्वस्तिव द्विपद रवन्तु स्वस्ति ॥ द्विचतुपद स्वस्तिव
वज्रनामार्ग स्वस्तिपन्मागदपुच स्वस्तिमार्गो स्वस्ति
दिवा स्वस्तिमध्य दिनास्तिन सर्वन स्वस्तिरवन्तु
मादवे पापमागम सर्वसत्वा सर्वप्राणा सर्वसन्तु
निरामया सर्वकल्याणि पस्यन्तु मादचिट पापमा
गम जानिह कुलानि समागमानि स्थानानि कुमा
पुथमा ॥ चालेथा कुवदुभव समगपूजासु दिवाव

मानो वचनतु धर्म्मः ॥ ॥ मूर्त्तीस्थापन मूर्त्तिमन्त्रस्य
हुं फट् स्वाहा ॥ ह्लां मंगलः ॥ वाक्ष्म ॥ ॐ सर्व्वहस्तन हुंकार
शंख व्यजनाउंवज्रव्यजन हुं ३ ॥ नमाधान ॥ नमस्त्रलि
नाभिमध्ये पद्मासन संज्ञान पद्ममायक मुपरिवज्रा
वज्रास निकाल ॥ निमशुल्ल मुकावाहुवपीनवक्षु भद्र
मुख चतुर्हस्त वामदक्षु कमशुल्लुधव पीताम्बराम्बरस
मुक्षसं यक्ष पविन निभ्रं जटामकुटावा भिश वज्रस
वालंकृत भालिन समयाभिविकाय ॥ नक्ष हिमहाम्बु
न देवाषि द्विजसमूह गृहिन्वा हृदिमहालक्ष्मी सहि
भ्रमवस्वाहा ॥ ह्रूंपनह्लानाभिवाक्ष्म ॥ धनवज्रथनि
भ ॥ ॐ नार्द्दवाजहुं ॥ निलाजव ॥ ॐ सर्वनथागन काय
विशाधनस्वाहा ॥ ॐखलस्वहायाथ ॥ नमाभूमिसमा
न ॥ धनघृमशाधन ॥ वचाधाधान २१ पंचबुद्धस्वरूप
पूजायाय ॥ नमाप्रथमाह्वानि ॥ स्वस्तिवाक्ष्मन्यादि ॥
मुत्वज्यादिपादिपविषाविष महाशिय हव्य कव्यवा
हनाय यजमानस्य आसिद्धकु पुष्टिकु प्रथमाह्वानि
गृह्ण २ पंचा हुं फट् स्वाहा ॥ पंचापचार पूजानास्पासुनि
मुक्तसंन्यादि ॥ नर्यस ॥ शमयाय ॥ विहिव ॥ ॥ ॥ नि
प्रथमाह्वानि ॥ हृदयमंत्र आवाहुत्थ ॥ नमाह्वानाह्वानि

स्वस्तिवाच्छन्यादि॥ ॥ मंगुलस्नानहोमिगृह्णरुं
ॐ ह्रीं रुं स्वाहा॥ शुलापाणकलशाथिय॥ पञ्चपवान
सुनि॥ मंत्रेण॥ ॐ ह्रीं दसासिल॥ पुष्पनाकिसानिस
मस्य पूजायाय॥ ॥ वंशुमहापाषंडस्वरूप॥ ॥
स्वाहाय॥ ॐ वंशुमहापाषंडायस्वाहा॥ स्मयक्काय॥
ॐ स्वां वाक्काय॥ मनविय॥ मायकाय॥ ॐ धर्म्मावा
न्यादि॥ धूलिधूनका पुष्पकपुनाकि यक्षकसंगाय॥
निपुरु खलूस चक्कि माय॥ पूजायाय॥ गा स्वाविय
धूमागाविक्काय॥ देवपूजा॥ देवनाहानिविय॥ ॥
स्वस्तिवाच्छन्यादि॥ देवनाहानिगृह्णरु ॐ ह्रीं रुं
स्वाहा॥ पंचापवानपूजास्तुनि॥ मंत्रेण॥ थनपुष्पं
निविय॥ मुडुवानवय दक्षिणासहिन॥ स्वस्तिवाच्छ
पुष्पहानिपूरयरुगृह्णरु ॐ ह्रीं रुं घृनाहानिस्वाक्कि
स्वाहा॥ ॥ पंचपवान पूजावास्पास्तुनि॥ ॥
थनपुष्पविक्काय॥ ह्लायनक्क॥ वाक्कपूजा॥ किडामस
गुडुपूजा॥ दक्षिणाक्काय॥ निवालाविय॥ किडा
नयाय॥ सिद्धानक्क॥ कलशानिच्चाक्कविय॥ ॥
गोवाहानिविय॥ वृहेडुय॥ हवकुक हवपावि
स्नानकुंभरुं॥ घृनाहानिविय॥ ॐ दंगोवाहानि

गृह्णा घृताङ्गमिस्वाहा॥ ॥पंचोपचारपूजास्तुति

ॐ मेगृहणा द्विसांक्षिप्तसमाप्त॥ ९॥ ॥

ॐ नमो श्री मञ्जुनाथाय ॥ ॥ मञ्जुश्रीलोकनाथ जिन
वर मकुटा · आम्बल · वाभिसत्व · मैत्रीया · लोकजपाणि ·
सुखवल · यक्षा · राक्षा · रुद्रपाया · वुधा · वेलाचनाथ ·
मैत्रुवस · नामिल · कंदानिधकाथा ॥ मुष्टा ॥ हुंहुंकाल
वज्र · पद्मपाणि · दमधा · वज्रयक्षाक्रुस्का ॥ पीमाहावाहु ·
राजा · त्रिपुरासमथना · नर्किराजा · माहात्मा · सुक्षाल्य ·
चक्रमु · पानिदिनमथना · गधहस्तियमाली ॥ मुष्टा ॥
॥ २ ॥ संघलोकवधु · गुणाश · निलया · वाधिचिक्र ·
सूचिक्र ॥ वुद्धपाभाघसिद्धि · विहिमवलिमलाहिलुका ·
नीलदंशु · वुद्धासालिरराजा · विजिन · जिनगुना · सर्वसत्वा
नुकंपा ॥ मुष्टा ॥ ३ ॥ पद्मचुदावनाया · मदनवृक्ष
नि · ज्ञानसंगायगाया · मारीची · मायमाया · सर्वलक्षयहया ·
पीमवर्षु · निवका · मायूरी · मामकीव · विजिन त्रिपुराश ·
पाशुपालावनाथा ॥ मुष्टा ॥ ४ ॥ गधारी · जागुलीव
हुजगृहि · नदना · खड्गपाशा · कुशगृहा ॥ वाराही · वज्रह ·
स्ता · जुसीपवसुधरा · धर्मवाम · उधरीव · कंयुरी · ज्ञानकेतु ·
धज · निगदला · यद्धुजा · सर्वरीव ॥ मुष्टा ॥ ५ ॥
वीशामाल्या · सुगीतिलाया · पाथिस · जिनवसा · सावली ·
धूपवजा · वनालि · गधवजा · प्रहसिगवदना · सागामि ·

आर्य्यगावा॥ लक्ष्मीबुधस्यवाधि सकलकयहरा सावथी
दीपर्वजा॥ मुष्टा॥ ६॥ वैसाल्यावास्यवक्त्र पथिन
जिनवर पर्वत गृह्णाम आवल्यावाधिमूल - क्रिमिनि
हिनकरा आकनवाधिवृक्ष श्रीमद्भवनावा सूवगमन
मिन सम्बक्कहन्द॥ मुष्टा॥ ७॥ कार्यवोछपन्न
धजमपिनिहिन भावनामस्ययुग्म वाराही पुष्पकुंज
मुनीवरवचन वजघण्टा निनाद वृद्धानापानिहस्य
सुनन नामिन हास्यजास्यवीवास्य॥ मुष्टा॥ ८॥
शीचक्रपुत्तलीक धजवर कलश चामलमत्स्ययुग्म
चक्र हमदन चक्रिशिकथा दाहिनावर्त्तशंख
गाकंपाशंकशाटि दधिरत्न कुसुम पावकानिपमाश
मुष्टा॥ ९॥ ॐ निर्मीसुष्ट मंगलकाजसमाप्त॥
शुकमस्तु स्वस्तिव कूटावृद्ध स्वस्तिदेवा सप्तसृग
स्वस्ति सर्वानी सुमानी सर्वकाल दिसंदुव वृद्धपुण्या
नुकावन देवमानामनन्त यथार्थ समानि पन सर्वाश्या
य समाधिन स्वस्तिवद्विपद्द सवतु स्वस्तिद्विचतुष्पद
स्वस्तिव वजमामार्ग स्वस्तिपन्थागदेषुव स्वस्तिमार्गो
स्वस्ति दिवा स्वस्तिमध्य। दिनास्तिन सर्वत स्वस्तिर
वतु मादवे पापमागम सर्वसत्वा सर्वपाश्या सर्वत्तु

निरामया· सर्वकदा निपस्पंतु· माकश्चिमूपापमागम·
जानिह· शुभानि· समागमानि· स्थिमानि· शुभांप्रथमां·
चलिथा· कूवेनुभव· सनमंपजासु· । देवाव· यशोवचनतु
वर्म्म ॥ ॥ ॥

सम्वतु· २०२१ साल· वैशाष· कृष्ण· दशमीयां तिथौ·
शामवार· खुद्ध· ॥ ॥ दंपुस्कदं· नीलवाजवज्राचार्य्यन·
लिषितम् ॥ गावाहाल·शाल· बुवाहाल· भगावान्
चाक· वस्तिग ॥ शुभम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मीजयागु· वीजारवं ॥

भवना· अगेएकवानापुर्थयामिमहामने ॥
भवनां अगे· छपिनिगु·होने· छगुवि। नयाये·
छुलाधासा ॥
परोपकाराय· फलंतिवृक्ष· परोपकाराय· दुग्धं
तिगाव· परोपकाराय· वहंति· नदी· परोपका
राय· इदं शरिर ॥ वृक्ष· धमासिमा·
परोपकाराय· फलंतिवृक्ष· ; मवा· मिसागा·
अमासी· फसी· अंह· केरा· पस्या· उपकार·
लागोहेरवं ॥ परोपकाराय· दुग्धं तिगाव·

गाव धैव सा: पक्षा: व्याघ्रा: इरु विपि सातनं इ
परयाउपकार लाजिहेखं परोपकाराय वहंति नदी
नलाउ पुरुष पर्वत पर्वत नलाउ पुरुषव परया
उपकार लाजिहेखं परोपकाराय इदं शारिर
ध शारिरं परयाउपकार लाजिहेखं
इ पिस कंयादानयाना वीज्यात अरपल हेजुल
वीजयागु वीजाखं
कायो हंशा नदी जलवीना धेनुश्च इरुवं वीना
मीत्रे प्रीतीवीना गृहे स्त्री वीना वीद्या वीना
पाखिन
कायो हंशावीना ध शारिरे इवे पाराव वायु मन
वाव ध शारिर छु सोभामइ नदीजलवीना
अधति नलाउ पुरुष लहमदेक छु सोभामइ
धेनुश्च इरुवंवीना इरुमव्युल सा छु सोभामइ
मीत्रे प्रीतीवीना प्रीतामइल पासा छु सोभामइ
गृहे स्त्रीना स्त्रीजाती मासामइगु छे छु सोभामइ
वीद्यावीना पाखिन वीद्यामसल आखंमसल
पाखिन छु सोभामइ
इ पिस कंयादानयाना वीज्यात अरपल हेजुल

मीमायागु वाज्यारवं

भवतांअगे रक्षवानाप्रार्थयामि महामते ॥
भवतांअगे छापिनीगु हाने छगुरवं वीनियां
छुलाधासा ॥ ॥ रक्षान विद्या नतपोव दानं
ज्ञानं शीलं गा गुणोन धर्म नेमृत्यु लोके भुमि
भारभुता मनुष्य रुपेण मृगाचरंति ॥
येषान विद्या गुप्तोपके विद्यामदयाचनी तप
दान धर्म ज्ञान गुणा शील स्वभाव मदे
ते मृत्यु लोके भुमिभारभुता ध मृत्यु लोके
पृथीक भारकावलजुया जीमी ज्ञामचाजा
भुजोलमरव हानधर्म शील स्वभाव ज्ञान
गुणा संपुर्णिरेजुपाचोल भुलीमुख
मनुष्यरुपकया चला वोहोंजुध्ये धाहोंजुइ
माली मीजया विजारवं

नक्षत्र भूषणा चन्द्रो नारीणां भूषणापति ॥
पृथ्वीवी भूषणा राजा शीलसर्वत्र भूषणा ॥
नक्षत्रभूषणाचन्द्रो नारायणाया शोभाछु चन्द्रमा
नारीणा भूषणापति स्त्रीयाशोभाछु छम स्वामी
भात पृथ्वीवीभूषणाराजा पृथ्वीवीयाशोभाछु राजा
शीलसर्वत्र भूषणा शीलस्वभाव चक्कनहे शोभा

अथयामिति. छेंहे मीसामदे कैं छुशामउ.
अथयामिति छांपिसं कन्यादानयानाविज्यात
असल्बेजल.
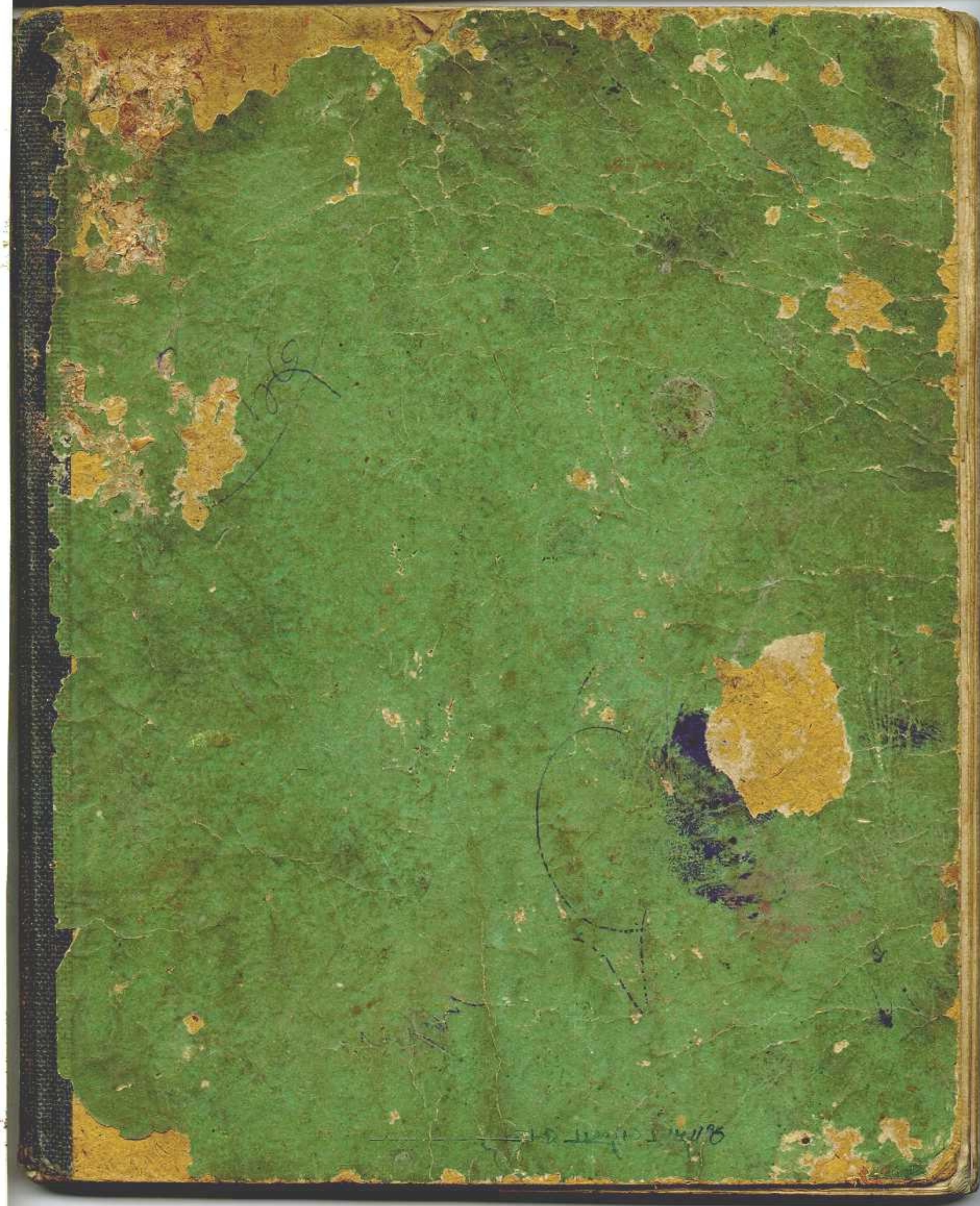
आशा सदन
426 I
ASHA ARCHIVES